चन्दामामा
अप्रैल १९८९

डायमंड कामिक्स में
विंकी के मम्मी पापा
पलटू और नये साल की पार्टी
फौलादी सिंह और शैतानों की टोली
छोटू लम्बू और भिखारी का प्रेत
मोटू छोटू और खजाने की लूट
राजन इकबाल और अद्‌भुत डकैती
चाचा भतीजा और उड़ने वाली छिपकली
मंगल पाण्डेय
मूल्य प्रत्येक 5/-
डायमंड कॉमिक्स पहेली प्रतियोगिता में भाग लेकर 2 लाख रूपयों के नकद इनाम प्राप्त करें।
विवरण अगले अंक में
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
चाचा चौधरी 6
ताऊ जी 5
महाबली शाका 3
मूल्य प्रत्येक 12/-
नई बाल पॉकेट बुक्स
पलटू और जादूगर गोगी 3.00
पिकलू और जंगल का शैतान 3.00
चाचा चौधरी और श्री डब्लू 3.00
बिल्लू और बुलबुल का बाग 3.00
महाबली शाका और कबीलों का दुश्मन 3.00
मोटू पतलू और जादूगर काला मुंडा 3.00
फौलादी सिंह और सुपर नवीन 3.00
मीकू और बंदर का ज्योतिष 3.00
डायमंड मिनी कॉमिक्स
ताऊ जी और छमछम का चमत्कार
विक्रम बेताल और परोपकार किसका
मोटू छोटू और गले पड़ी मुसीबत
महाबली शाका और शहर का शैतान
मूल्य प्रत्येक 2/-
डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Parry's
PARRYS
प्रिय दोस्तो,
इस बार तुम्हारी किस्मत सचमुच रंग लाई है.
कॉफी बाइट, लॉली पॉप, कैरामिल्क और
ट्राय मी, सभी ने इस बार खूब मेहनत की है.
एक दूसरे से बढ़चढ़कर कुछ बढ़िया चीज
तुम्हें देने के लिए, तुम्हें खुश करने के लिए.
COFFY BITE
Try-Me
CARAMILK
Parry's
THE KING OF SWEETS
फिंगर प्रिंट फिगर्स
ज़रूरी सामानः
एक पेंसिल और रबर • सफ़ेद ड्रॉइंग पेपर
• वॉटर कलर • काला फेल्ट पेन • पैलेट या
कोई पुरानी प्लेट–रंगों को मिलाने के लिए • एक पुराना कपड़ा
चित्र बनाने और रंग भरने का यह एक बिल्कुल नया, निराला तरीका है. आमतौर पर तो तुम पहले चित्र बनाकर फिर उसमें रंग भरते हो. फिंगर प्रिंट फिगर्स के लिए तुम्हें इसका बिल्कुल उल्टा करना है. रंग की प्लेट लेकर अपनी पसंद के ४-५ रंग उसमें लगा लो. हर रंग में अलग-अलग थोड़ा पानी मिलाओ. अब अपने अंगूठे में कोई एक रंग लगाकर ड्रॉइंग पेपर पर अंगूठे की छाप लगा दो.
जल्दी से अपना अंगूठा किसी पुराने कपड़े से पोंछ लो, और अब ऐसे ही दूसरे रंग लगाओ. अब देखो कि उन छापों पर तुम क्या बना सकते हो. जब कागज पर रंग बिल्कुल सूख जाए तो काला फेल्ट पेन लेकर कल्पना अनुसार लाइनें खींचो. कुछ इस तरह कि उन अंगूठे की छापों से बन जाए कोई तस्वीर, कोई मछली, या पक्षी या मेढ़क या भेड़ या बिल्ली और या फिर हम्टी डम्प्टी.
इस तरह तुम कितनी ही और चीजें बना सकते हो. चाहो तो एक बड़े सफ़ेद कागज पर फिंगर प्रिंट फिगर्स बनाकर उसको गिफ़्ट रैपर की तरह काम में ला सकते हो. या फिर छोटे-छोटे कागज़ों पर फिंगर प्रिंट फिगर्स बनाकर उन्हें अपने खास राइटिंग पेपर की तरह इस्तेमाल कर सकते हो. ग्रीटिंग कार्ड्स और ऐसी ही ढेर सारी चीज़ें भी बना सकते हो.

PAGE
पैरीज़ टॉफियां और बिस्किट-हर किसी को भायें.
CARAMILK
बताओ तो तुम्हारे पास कितने दिल हैं? सिर्फ़ १ ही न! लेकिन ऑक्टोपस सबसे निराला है क्योंकि उसके पास हैं ३ दिल.
पेड़ दिन में पानी छोड़ते हैं और एक बड़ा पेड़ ज़मीन से पर्याप्त मात्रा में पानी सोख लेता है और एक गर्म दिन में ६० बाल्टियों जितना पानी, अपनी पत्तियों के ज़रिये बाहर छोड़ देता है.
इस प्रयोग के ज़रिये तुम खुद देख सकते हो कि यह कैसे होता है. झाड़ की पत्तियों से भरी डाली को (बिना तोड़े) प्लास्टिक की थैली के अंदर डाल दो. इस थैली के खुले हिस्से को डाल पर कस कर बांध लो और उसे इस स्थिति में ३ दिन के लिए रख दो. तुम देखोगे कि थैली के अंदर ढेर सारा पानी जमा हो गया है. जितना गर्म दिन होगा उतना ही ज़्यादा पानी थैली में इकट्ठा हो जायेगा.
A
B
C
D
E
F
G
क्या तुम जानते हो
क्या तुम जानते हो कि मछलियों को भी समुद्री बुखार जकड़ सकता है. लेकिन उनकी तबियत तभी बिगड़ती है जब उन्हें बाल्टी में डालकर गोल गोल घुमाया जाये, या फिर उन्हें जहाज के बोर्ड पर रख दिया जाये. समुद्र में कभी उनकी तबियत ख़राब नहीं होती.
अपने झंडे पहचानो!
यह टूरिस्ट बस, दुनिया के अलग-अलग देशों के यात्रियों से भरी है. अगर तुम झंडों को पहचानते हो तो कौनसा यात्री किस देश का है, यह तुम्हें मालूम हो जायेगा.
उत्तर: ए - स्विट्ज़रलैंड बी - भारत सी - रूस
डी - टर्की ई - जापान एफ - इंग्लैंड जी - अमेरिका
Try-Me
Parry's
THE KING OF SWEETS
CUT AND KEEP
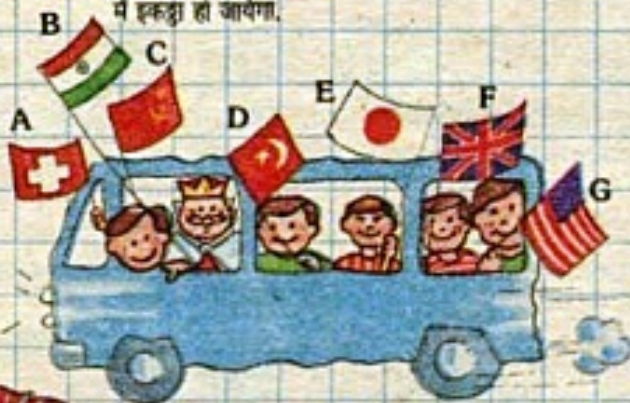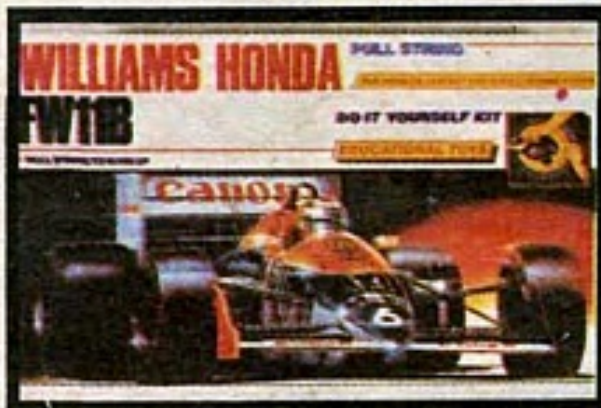
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए एक आवश्यक वस्तु है धन । कृपण बने बिना धनार्जन करते हुए जीवन को सफल बनाना सब से नहीं बनता । वह एक कला है । "अयाचित धन" शीर्षक कहानी इसका एक उत्तम उदाहरण है ।

अमरवाणी

मूर्खस्य पंच चिह्नानि, गर्वी दुर्वचनी तथा,
हठी चाप्रियवादी च, परोक्तं नैवमन्यते ॥

[गर्व, दुर्वचन, हठ, अप्रिय वचन कहना और दूसरों की अवहेलना करना - ये पाँच मूर्खों के लक्षण हैं ।]

वर्ष : ४१ अप्रैल, १९८९ अंक : ८

एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००

मनोज कॉमिक्स

के मई माह के 16 नये कॉमिक्स पढ़िये
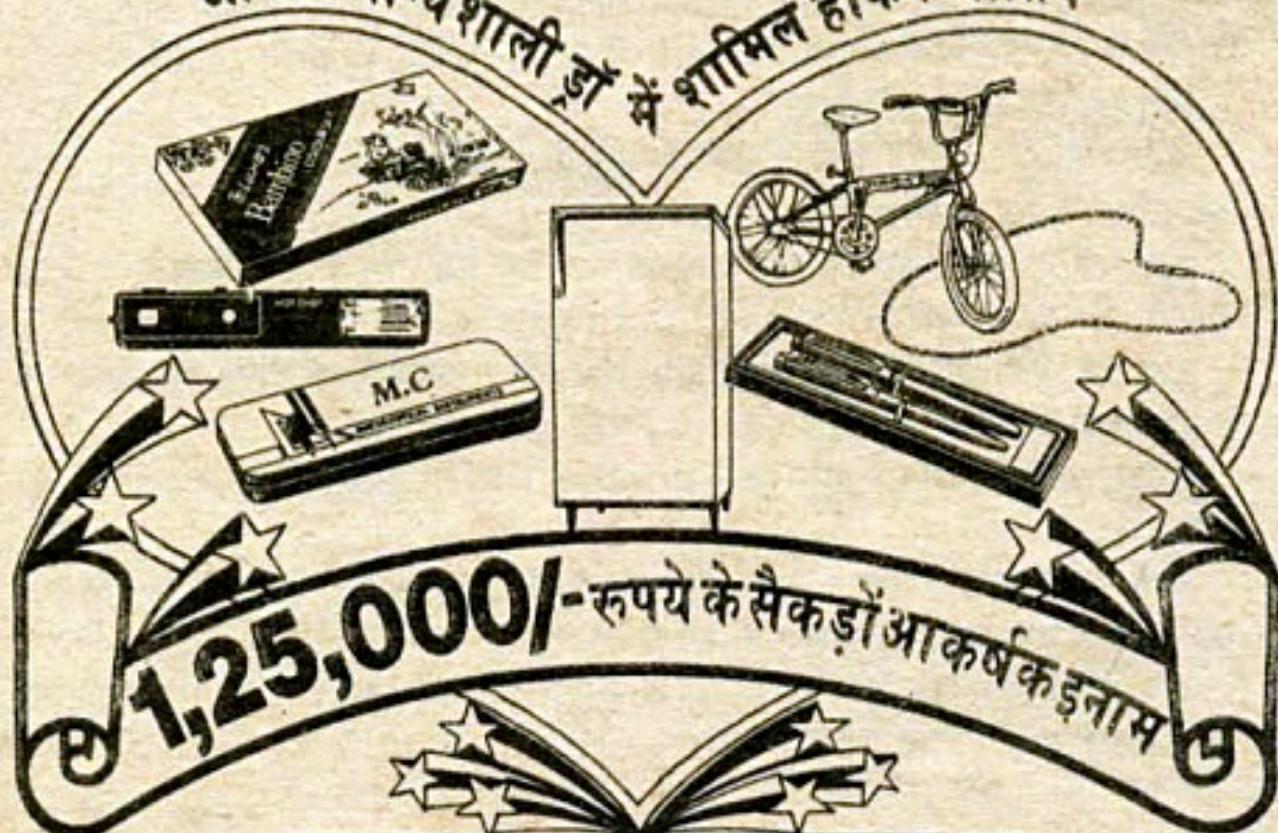
मनोज कॉमिक्स के मई माह के निम्न 16 कॉमिक्स खरीदते समय
अपने पुस्तक विक्रेता से एक भाग्यशाली टिकट मुफ्त प्राप्त करें

- वृक्ष देवता का चमत्कारी हार
- राजमहल का षड्यंत्र
- लाश का संदेश
- अब आया तूफान
- कैप्सूल की वापसी
- इंस्पेक्टर मनोज और मौत का निर्माता
- किस्मत का लेख
- शाही खजाने के चोर
- आफत की जड़
- एक खिलाड़ी तीन अनाड़ी
- कौन सच्चा कौन झूठा
- वन देवता और विचित्र फल
- अलीबाबा की तिजोरी
- चोर का भाई चोर
- बन्द गुफा का कैदी
- लाश का भ्रमर

विशेष नोटः- इस ड्रॉ में जून माह में प्रकाशित अन्य 16 कॉमिक्स पर फ्री वितरित की गई टिकटों को भी शामिल किया जा रहा है। अर्थात् उपरोक्त ड्रॉ मई व जून के सैटों पर वितरित की गई भाग्यशाली टिकटों पर निकाला जायेगा।

मनोज कॉमिक्स 26/97, अग्रवाल मार्ग, शक्तिनगर, दिल्ली- 110 007

KARE/231

पुरस्कार

एक ज़मींदार कर्ण के समान उदार थे । अपना हित करनेवाले को वे ज़रूर कोई-न-कोई पुरस्कार देकर संतुष्ट करते ।

एक बार उन्होंने अपना कुर्ता धोबी को धुलाने के लिए दिया, पर यह भूल गये कि उसकी ज़ेब में बीस सिक्के हैं । दूसरे दिन धोबी ज़मींदार के घर आया और निवेदन किया - "सरकार, लगता है कुर्ते की ज़ेब में रखे बीस सिक्कों की बात आप भूल गये हैं । " ज़मींदार को उसके २० सिक्के ईमानदारी से लौटा कर वह घर जानेको हुआ ।

ज़मींदार ने कहा - "ऐसे ईमानदार लोग तो आज की दुनिया में न के बराबर हैं । ये दस सिक्के तुम पुरस्कार के रूप में स्वीकार करो । मेरा कहना मानो । "

कुछ दिनों के बाद ज़मींदार ने और कपड़ों के साथ वही कुर्ता धोने के लिए धोबी के पास भेज दिया । अब की बार कुर्ते की ज़ेब में दस सिक्के हैं इस बात को ज़मींदार भूल गया ।

दूसरे दिन धोबी ज़मींदार के पास आया और उसने कहा - "सरकार, कल फिर आप अपनी ज़ेब में पाँच सिक्कों के होने की बात भूल गये । ये लीजिए आपके पाँच सिक्के ! "

ज़मींदार ने किसी बात का स्मरण करते हुए कहा - "अरे, मेरे ख्याल से ज़ेब में दस सिक्के होने चाहिए । "

धोबी ने झट सफ़ाई में कहा - "हुज़ूर, मैंने पहले ही पाँच सिक्के रख लिये हैं, यह सोचकर कि आप मुझे निश्चय ही दस में से पाँच पुरस्कार के रूप में देंगे । "

अब ज़मींदार ने महसूस किया कि हर बात में पुरस्कार देना उचित नहीं है । तब से उसने अपनी आदत बदल डाली ।

बहू का चुनाव

करुणा अपने नाम के जैसी ही बहुत दयालु प्रकृति की लड़की थी । उसकी उम्र यद्यपि आठ साल की ही थी, फिर भी परिस्थिति ने उसे अपनी अवस्था के लिये कुछ ज्यादा ही समझदार बना दिया था ।

दूसरे का दुख समझना यह खूब जानती थी । कोई बीमार कराह रहा हो, तो वह दुखी बन जाती । कोई भूख से तड़प रहा हो, तो उसकी आत्मा व्याकुल हो उठती । असहाय, दीन-दरिद्रियों प्रति उसे बड़ी हमदर्दी थी ।

करुणा जब एक साल की थी, तभी उसकी माँ का स्वर्गवास हुआ । पिताने दूसरी शादी कर ली । सौतेली माँ ने घर आने पर छोटी बच्ची को प्यार नहीं दिया; वह उसका द्वेष करने लगी । फिर भी माँ लाचार थी । इसलिये करुणा जब भूख से रो पड़ती, तब उसे थोड़ा सा खाना खिलाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेती थी । करुणा बेचारी अड़ोस-पड़ोसवालों के वात्सल्य और दयालुता पर ही पलकर बड़ी हो गयी ।

स्वयं दुखी होने के कारण दूसरों की पीडा वह झट जान लेती । घायल की गति घायल जानेवाली बात उस पर खूब चरितार्थ होती थी ।

एक बार इस सौतेली माँ जानकी के पीहर में कोई शादी होनेवाली थी । इस पर वह आठ साल की लड़की को घर में अकेली छोड़कर अपने पुत्र व पति को साथ लेकर अपने मायके चली गयी ।

करुणा जैसी छोटी कमसिन लड़की को अकेली घर पर छोड़ते हुए सौतेली माँ के दिल को ज़रा भी व्यथा न हुई । अब अकेली उसको घर में डर तो नहीं लगेगा । वह कैसे खाना पकाएगी ? अकेली कैसे घर संभालेगी ?

संध्या समय करुणा ने अपने लिये चावल पकाया और अचार के साथ खा लिया । उसी

बकुला महादेविया

वक्त ज़ोर की बारिश शुरू हुई । करुणा अकेली थी इसलिये पड़ोसन राधाबाई ने उसे रात सोने के लिये अपने घर बुलाया ।

बड़ी सावधानी से घर का दरवाज़ा बन्द करके करुणा बाहर आ गयी, तो देखती क्या है - बाहर चबूतरे पर कोई आदमी पड़ा हुआ है ।

उसने झट उसके पास जाकर उसे छूकर देखा । अजनबी आदमी तो बेहोश था और उसका बदन तवे की भाँति तप रहा था ।

"उफ़ ! लगता है, इनको बुख़ार चढ़ आया है ।" बुदबुदाते हुऐ करुणा ने उस आदमी को थपकी देकर पुकारा, "बाबूजी, बाबूजी !"

आदमी ने बड़ी मुश्किल से आँखें खोलीं । करुणा ने कहा, "धीरे से उठिये । घर के अन्दर जायेंगे । आप को बड़ा ज़ोर का बुखार है । आप कौन हैं यह तो मैं नहीं जानती । पर आप को इस समय किसी की मदद की ज़रूरत है । अन्दर चलिए, मैं आपकी कुछ सेवा करूँगी । सुबह तक आपका बुखार उतर जाएगा । फिर आप अपने घर जा सकते हैं ।"

हाथ का सहारा देकर करुणा उसे घर में ले आयी और पलंग पर लिटा दिया । फिर सूखा कपड़ा लाकर उसका सिर पोंछकर बोली, "बाबूजी, ज़रा उठने का कष्ट कीजिये, गीले कपडे बदलकर सूखे पहनिये ।"

फिर उस व्यक्ति की बगल में पड़ी थैली की ओर इशारा करके पूछा, "क्या इस में आप के वस्त्र हैं ?"

आदमी के 'हाँ' में सिर हिलाते ही करुणा ने थैली में से वस्त्र निकाले और सहारा देकर उन्हें उठ खड़ा किया ।

"आप कपड़े बदल कर लेट जाइये, तब तक यहीं दो मकान छोड़ कर रहनेवाले वैद्य के पास जाकर मैं आप के लिये दवा ले आती हूँ । ये वैद्य महाशय बहुत अच्छे हैं । हमारे यहाँ कोई बीमार होता है, तो हम उन्हीं के पास जाते हैं । वे ऐसी दवा देते हैं कि एक ही दिन में बीमारी चली जाती है । मुझे लगता है, कल सुबह तक आप इस बुखार से मुक्त हो जाएँगे । " कहकर बरसात से बचने के लिये सिर पर से कंबल ओढ़कर करुणा घर के बाहर निकल गयी ।

दस मिनट बाद लौटकर वह बोली, "लीजिये, वैद्य ने बुख़ार के लिये यह दवा दी है । पड़ोस की मामी से माँगकर मैं थोड़ा गरम दूध लायी हूँ । दवा खाकर ऊपर से दूध पीजिये और सो जाइये । "

करुणा की ओर कृतज्ञता से देखते हुए वह व्यक्ति उठ बैठा । दवा खाकर उसने जब गरम दूध पी लिया तब उसके बदन में ज़रा सी फुर्ती आ गयी ।

"तुम कौन हो बेटी ? नाम क्या है तुम्हारा ? तुमने मेरे लिए इतनी तकलीफ क्यों उठाई ? मैं बहुत परेशान था कि रात में कहाँ जाऊँ, कहाँ सोऊँ ? तुम आ गई और कुछ भी परिचय न होते हुए तुमने इतनी सेवा की । कैसे धन्यवाद दूँ तुम्हें ?" करुणा की ओर प्यारभरी दृष्टि से देखते हुए आदमी ने पूछा ।

"मेरा नाम है करुणा । मैंने जो कुछ किया इसमें क्या बड़ी बात है ? मुसीबत के समय ही तो मदद की ज़रूरत होती है आदमी को । मुझे लगता है मैंने अपना कर्तव्य किया । इसमें धन्यवाद की क्या आवश्यकता ? आपकी

शुभेच्छाएँ मेरे लिए बस है । '' इन शब्दों के साथ करुणा ने अपना पूरा वृत्तान्त सुनाया ।

इसके बाद वे दोनों सो गये । सुबह करुणा की आँख खुली, तो उसने देखा - वह आदमी अपने गाँव जाने की तैयारी में बैठा है !

उसने करुणा से कहा, "बेटी, कल तुम ने अपना परिचय तो दिया, लेकिन मेरे बारे में नहीं पूछा ? मेरा नाम है गुरुनाथ । शहर में मेरे चार पाँच प्रकार के व्यापार हैं । मेरे एक बीमार मित्र को देखने आया और खुद बीमार हो गया । '' और हँस कर "तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया है - मैं कभी नहीं भूल सकता । यथाशक्ति मैं भी तुम्हारी मदद करना चाहूँगा । तुम्हें कभी अपने इस मामा की ज़रूरत पड़े तो ज़रूर याद रखो; यह रहा मेरा पता । '' ऐसा कहते हुए अपना पता लिखा हुआ कागज़ का पुर्ज़ा करुणा के हाथ दे दिया और गुरुनाथ वहाँ से चल पड़ा ।

दस वर्ष बीत गये । करुणा अब उपवर हो चुकी थी । इन दस वर्षों के काल में उसकी सौतेली माँ अचानक बीमार होकर मर गयी थी । करुणा को उसके नाना की ओर से अयाचित रूप में थोड़ी बहुत जायदाद प्राप्त हो गयी थी ।

गरमी के दिन थे । दोपहर की कड़ी धूप थी । करुणा खाना खाकर बाहर आयी । चबूतरे पर से किसी के कराहने की आवाज़ सुनायी दी । वहाँ अस्सी वर्ष का एक बूढ़ा बेहोश सा हाँफ रहा था ।

उसके पास पहुँच कर करुणा बोली, "ओह दादाजी ! ऐसी कड़ी धूप में आप अकेले कहाँ से आये ? उठिये धीरे से और अन्दर आइये । '' और उसे सहारा देकर करुणा घर में ले गयी ।

बूढ़े को पलंग पर बिठाकर करुणा ने गीले कपड़े से उसका चेहरा पोंछ दिया और उसे थोड़ा सा मठ्ठा पीने को दे दिया । ज़रा सँभलकर वृद्ध बोला, "जुग जुग जियो बेटी । '' थोडा तरोताज़ा होकर वह वहाँ से उठने लगा ।

झट उस को रोककर करुणा ने पूछा, "इस कड़ी धूप में कहाँ जायेंगे दादा ?"

वृद्ध बोला, "जानती हो, मैं दरअसल इस गाँव में क्यों आया ?" फिर अपनी थैली में से धन की पोटली निकाल कर उसे दिखाते हुए

कहने लगा । "मेरा पुत्र गुरुनाथ शहर का मशहूर व्यापारी है । इस गाँव से कुछ कर्ज़ वसूलने के लिये उसने मुझे भेजा है । मैं भले ही शाम तक न लौट पड़ूँ; मगर धन उसके हाथ न पहुँचा तो मेरी खैर नहीं । "

वृद्ध की बात सुनकर करुणा को दस वर्ष पूर्व की वह घटना याद आयी और वह घर के भीतर से गुरुनाथ का पता लिखा हुआ वह पुर्ज़ा ले आयी । वृद्ध को वह पता पढ़कर सुनाया और उसने पूछा, "दादाजी, क्या यही गुरुनाथ आप का पुत्र है ?"

"हाँ बेटी, लेकिन यह पता तुम्हें कैसे प्राप्त हुआ ?" वृद्ध ने पूछा ।

करुणाने दस वर्ष पूर्व की वह घटना वृद्ध को बता दी ।

"ऐसी बात है ?" कहते हुए वृद्ध पलंग पर से उठने को हुआ ।

करुणा ने फिर उसे रोकते हुए कहा, "दादाजी, मेरे एक सवाल का जवाब दीजिये । यह तो स्पष्ट हो गया है कि इस उम्र में आप का पुत्र ठीक तरह से आप की देखभाल नहीं कर रहा है । फिर भी क्या आप उसी के पास रहने का निश्चय कर चुके हैं ?"

"बेटी, ऐसा निश्चय तो मैंने नहीं कर लिया है, मगर जब अपना सगा बेटा मेरी देखभाल नहीं करता है, तो इस वृद्धावस्था में मुझे बिठा कर खाना खिलानेवाला कौन होगा ?" वृद्ध ने पूछा ।

"तब तो दादाजी, मेरी बात सुन लीजिये । अब तो आप खाना खाकर आराम कीजिये ।

शाम को मैं भी आप के साथ चल कर आप के पुत्र को समझाऊँगी कि वह आप की अच्छी तरह से देखभाल करें । करुणा ने समझाया ।

"बेटी, तुम ज़रूर किसी जनम में मेरी पोती हुई होगी । इसीलिये मेरे प्रति तुम्हारा यह आदर भाव है । तुम जैसा सोच रही हो, ज़रूर वैसा ही करो । " वृद्ध ने कहा ।

करुणा का पिता रंगनाथ जो किसी काम के पड़ोस गाँव गया था, वह शाम तक लौट आया । करुणा ने उसे वृद्ध के बारे में कहा ।

रंगनाथ ने वृद्ध को सलाह दी, "बाबूजी, आप मेरी बेटी के कहे अनुसार कीजिएगा, सब ठीक हो जाएगा । "

इसके बाद वे तीनों वृद्ध के साथ शहर गये । घर पहुँचने पर गुरुनाथ को देख वृद्ध मुस्कुराया । करुणा का हाथ पकड़कर वह

बोला, "देखो गुरुनाथ, मैं अपनी पोती को साथ ले आया हूँ । "

गुरुनाथ ने वात्सल्यभाव से पूछा, "बेटी, क्या तुम मुझे पहचानती हो ?"

करुणा ने मुस्कुराकर सिर हिलाया । इतने में वहाँ पच्चीस वर्ष का एक युवक आया । उसका परिचय देते हुए गुरुनाथ ने कहा "यह मेरा पुत्र श्रीकान्त है । "

इसके बाद गुरुनाथ का इशारा पाकर श्रीकान्त वहाँ से चला गया । अब गुरुनाथ ने रंगनाथ तथा करुणा से कहा, "कई लाखों के मालिक मेरे पिताजी ने जो नाटक रचा, वह तुम लोगों को आश्चर्य में डाल रहा है न ? मैं असली कहानी सुनाता हूँ । सुनो - दस साल पहले मैंने करुणा को देखा था । इसकी शान्त प्रकृति व दयाभाव से मैं बहुत प्रभावित हुआ था । श्रीकान्त मेरा इकलौता बेटा है । हाल ही में उसकी माँ का स्वर्गवास हो चुका । वह बड़ी ही कोमल हृदयवाली थी । उसकी इच्छा थी कि ठीक उसी की जैसी प्रकृतिवाली कन्या को अपनी बहू बना लें । मेरे पिताजी की परीक्षा में करुणा उत्तीर्ण हुई है । "

इसके बाद रंगनाथ का हाथ पकड़कर गुरुनाथ फिर कह उठा, "आप ने मेरे पुत्र श्रीकान्त को देख ही लिया है । करुणा को हम अपनी बहू बनाना चाहते हैं । आप अपनी अनुमति दें, तो हमें बड़ी प्रसन्नत होगी । "

"आप की इच्छा ही मेरी इच्छा है । " रंगनाथ ने संमति दी ।

"ऐसी बात नहीं, करुणा की पूर्ण स्वीकृति पर ही यह विवाह संभव है । क्यों करुणा, श्रीकान्त को तुम पसन्द हो । अब केवल तुम्हें अपनी राय देनी है । " गुरुनाथ ने कहा ।

करुणा ने लज्जा से सिर झुकाया । गुरुनाथ के पिता ने मन्दहास करके करुणा का हाथ पकड़कर कहा, "अरे गुरुनाथ, लड़की इससे बढ़कर और क्या कह सकती है ?"

एक शुभमुहूर्त पर करुणा और श्रीकान्त का विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ ।

ज़हरीली मिठाई

अमर पुरी राज्य के तीन सैनिकोंने एक बार अपने पड़ोसी राज्य अश्वदेश के एक गुप्तचर विनय को बन्दी बनाया और उसे ले अपनी राजधानी की ओर चल पड़े । रास्ता ऊबड़-खाबड़ था और धूप बडी तेज़ थी । रास्ते के दोनों तरफ पेड़ बहुत कम थे । इस लिए चलते चलते सैनिक थक गये । रास्ते में उन्होंने ज़रा सा विश्राम करना चाहा ।

सैनिकों ने विनय को एक समीप के पेड़ से रस्सियों से बाँध दिया । विनय के पास एक थैली थी । उसे खोलने से अन्दर से मिठाइयों की एक पोटली निकली । मिठाई से असली घी की सुगन्ध आ रही थी ।

मिठाई की सुगन्ध से सैनिकों के मुँह में पानी भर आया । ऐसी बढ़िया मिठाई बहुत दिनों में उन्होंने खाई न थी । चल-चल कर उनको भूख भी लगी थी ।

सैनिकों ने मिठाई तीन हिस्सों में बाँटी और उसे खाना शुरू करें, इतने में उनमें से एक के मन में शंका हुई कि शायद मिठाई में ज़हर मिला हो ! उसने बाकी दोनों को मिठाई खाने से रोक कर अपनी शंका प्रकट की – "देखो, यह मिठाई खाने से पहले सोच लेना चाहिए । कहीं इसमें ज़हर मिला हो, तो खाने पर लेने के देने पड़ेंगे । मुझे लगता है इसमें ज़रूर कुछ धोखा है । "

उनका संदेह देख विनय हँस पड़ा और बोला, "तुम लोग यूँ पसोपेश में क्यों पड़े हो ? मैं खुद खाकर दिखाऊँगा, एक टुकडा मुझे दे दो । तुम समझते हो इसमें कुछ धोखा होगा । ये मिठाई मैंने अपने लिए बनवा ली है । इसमें कुछ भी ज़हरीली चीज़ नहीं मिली है ! बिना डर के तुम लोग इसे खा सकते हो । देखो मैं थोड़ी सी खा लेता हूँ । मेरे खाने के बाद तुम शौक से खा लेना । "

इस पर एक सैनिक ने मिठाई का एक

अपर्णा शर्मा

टुकडा विनय के मुँह में ठूँस दिया । उस के बाद उन्हों ने उसे पानी भी पिलाया ।

आधी घड़ी बीत जानेपर भी विनय के शरीर में कोई परिवर्तन न देखकर सैनिक निश्चिन्त हो गये और उन्होंने भी मिठाई खा ली ।

थोड़ी देर बाद सैनिक फिर विनय को लेकर अपना रास्ता नापने लगे । रास्ते में एक जगह विनय अचानक ढेर सा गिर गया । सैनिक विस्मय में आकर विनय की ओर ताकने लगे ।

विनय सैनिकों से बोला, "मैं जानता था कि तुम लोग मुझे वैसे तो छोड़ेंगे नहीं । मुझे अपने देश ले जाकर हमारे देश के रहस्य उगलने को बाध्य करने के लिये तुम्हारे लोग अनेक प्रकार से खूब सताएँगे । ऐसे ख़तरे की कल्पना करके पहले से ही मैं ने ज़हर मिलायी मिठाई अपने पास रखी थी । यह ज़हर तत्काल अपना असर नहीं करता, धीरे से असर होता है । इसीलिये अभी तक मुझ पर कोई असर नहीं हुआ था । मेरी बातें मानकर तुम लोगों ने भी मिठाइयाँ खा डाली । "

विनय की ये बातें सुनकर तीनों के चेहरे पीले पड़ गये । इसके बाद विनय का छटपटाना भी एकदम बढ़ गया ।

यह देख सैनिकों में से एक ने कहा, "इस भेदिये ने हमें दगा देकर हमारे प्राणों को ख़तरे में डाल दिया है । खुद इसके मिठाई खाने पर थोड़ी देर उसका असर देखने के बाद हम ने मिठाई खायी है इसलिये हम पर उस ज़हर का असर अभी शुरू नहीं हुआ है । अब हमें क्या करना चाहिये ? कुछ सोचो तो, वरना हम भी तड़प तड़प कर मर जायेंगे । "

"हम इस दुष्ट को यहीं तड़प कर मरने को छोड़ देंगे और किसी वैद्य के पास चलेंगे । " दूसरे सैनिक ने सलाह दी ।

तीनों सैनिक वहाँ से भाग खड़े हुए और उनके जाने के बाद इतनी देर तक सफलता से अभिनय करनेवाला विनय मन ही मन मुस्कुराते उठ बैठा । दर-असल मिठाई में कोई ज़हर था ही नहीं !

अपनी योजना इस प्रकार सफल बनाकर विनय बड़ी खुशी से अपने देश के सीमा की ओर चल पड़ा ।

[४]

दूसरे दिन धीरसिंह सुलोचना से मिलने आया । तब सुलोचना ने कहा - "अब मेरा चौथा प्रश्न है - यहाँ से पचास मील की दूरी पर नैऋत्य दिशा में गुलाब-जल का एक माया-सरोवर है । उसका पूरा इतिहास क्या है ? "

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए धीरसिंह ने सुलोचना से तीन महीने की अवधि माँग ली और फिर वह नैऋत्य दिशा की ओर चल पड़ा । सात दिन चलने पर वह एक नगर में पहुँचा । रास्ते में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । एक बार वह जंगल की पगडंड़ियों से गुज़र रहा था, तो एक शेर के दर्शन हुए । आश्चर्य की बात है कि शेर अपने रास्ते चला गया । हींस्र श्वापदों की ध्वनियाँ तो उसने खूब सुनी । पर निडर होकर वह चलता ही रहा और जंगल पार कर गया । नगर की सीमा पर एक उजड़े कुएँ की चारों ओर लोगों की भीड़ लगी उसने देखी । पास में जाकर देखा - एक संपन्न परिवार के वृद्ध पति-पत्नि व्यथित अंतःकरण से विलाप कर रहे थे ।

धीरसिंह उनके पास गया और उसने उन्हें रोने का कारण पूछा । भीड़ में से एक ने कहा - "इस वृद्ध माँ-बाप का इकलौता लड़का गुणशेखर पिछले हफ्ते में यकायक कुछ पागल हुआ और इस कुएँ में कूद पड़ा । लड़का बहुत अच्छा था । अभी उसकी शादी होनेवाली थी । लड़की के माँ-बाप दो दिन पहले आकर लड़के को पसंद कर गये थे । और बीच में यह दुर्घटना आन टपकी । बेचारे
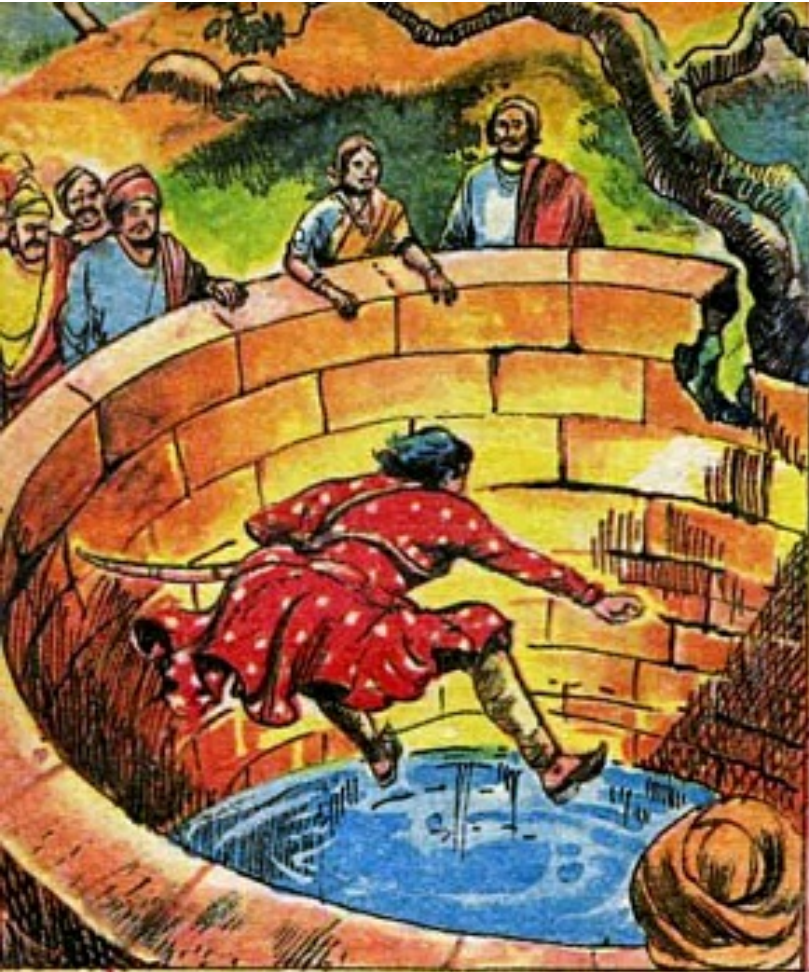
बड़े दुखी हैं । ''

धीरसिंह ने कहा – ''सभी लोगों को मौत तो अवश्यंभावी है । जो हुआ, सो हो गया; उसके लिए रोने-धोने से अब क्या होगा ? ''

''यह बात तो ठीक ही है । लेकिन हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि गुणशेखर की मृत्यु हो गई है । क्योंकि अभी तक उसकी लाश पानी के ऊपर नहीं आयी है । समझ में नहीं आता कि क्या चमत्कार हो गया है । कुएँ में गिरकर वह जाएगा तो कहाँ जाएगा । लाश ज़रूर ऊपर आ जानी चाहिए । कुएँ में कूदकर ढूँढ़ने के लिए कोई तैयार नहीं है । सब घबरा रहे हैं । '' – वृद्ध ने संदेह प्रकट किया ।

धीरसिंह ने निवेदन किया – ''आप के पुत्र को ले आने की ज़िम्मेदारी मैं स्वीकार करता हूँ आप चिन्ता मत करें। मैं शीघ्र ही लौटूँगा।

थोड़ी देर सोचकर धीरसिंह कुएँ में कूद पड़ा ।

कुएँ के अन्दर धीरसिंह गहराई तक पहुँचा, उसके पैर तह तक जा लगे । उसने चारों तरफ़ बारीकी से देखा । दाहिनी तरफ़ एक छोटा सुरंग जैसा तंग रास्ता उसे दिखाई दिया । उसमें प्रवेश करके वह फिर दाहिनी तरफ़ मुड़ा तो दो भारी-भरकम किवाड़ धड़ाम से खुल गये । धीरसिंह ने अन्दर प्रवेश किया । रंग-बिरंगे फूल और फलों से सुशोभित सुंदर उद्यान में एक शाही महल उसने देखा । धीरसिंह ने उसमें प्रवेश किया । महल में तरह-तरह के दीप रंग-बिरंगे प्रकाश फैला रहे थे । मध्य में चन्द्रशिला-फलक पर बैठकर एक लावण्यवती युवती वीणा बजा रही थी । वह संगीत-कला में बहुत प्रवीण थी । राग-रागिनियों की ग़ज़ब की तमीज़ थी उसे । वह अपनी वीणा से स्वर्गीय संगीत का निर्माण कर रही थी । सुननेवाला हठात् उसमें तल्लीन हो उठता । उसके सामने एक ऊँचे आसन पर बैठकर एक युवक तन्मय होकर उस युवती का गीत सुन रहा था ।

धीरसिंह के प्रवेश करते ही वीणा-वादन बन्द हो गया । आश्चर्य-चकित होकर युवक ने धीरसिंह की ओर देखा । धीरसिंह को लगा कि वही युवक गुणशेखर हो सकता है ।

धीरसिंह ने उसके पास जाकर कहा – ''गुणशेखर, तुम्हारे माँ-बाप आहार और निद्रा

छोड़कर उधर विलाप करते बैठे हैं । और तुम यहाँ विलास में अपना समय बिता रहे हो । यह कितना न्यायोचित है ? ज़रा सोचो तो । मैं अपने काम से जा रहा था, तो बीच में तुम्हारे गाँव में भीड़ देखी । कुएँ में गिरकर तुम्हारी मृत्यु होनेका समाचार मिला । कुएँ में कूदकर तुम्हें ढूँढ़ने के लिए कोई तैयार न था । सभी घबरा रहे थे । मैं साहस करके तुम्हारे पास पहुँच रहा हूँ । ''

गुणशेखर का सिर लज्जावश झुक गया ।

धीरसिंह ने अब उस युवती की ओर देखकर कहा - ''देवी, तुम बड़ी गुणवती दिखाई देती हो । लेकिन यह मत भूलो कि हमारे सौंदर्य, शक्ति तथा सामर्थ्य की सार्थकता तभी है जब उसका उपयोग दूसरों के कल्याण के लिए किया जाए । लेकिन तुम्हारे सौंदर्य पर मोहित हो गुणशेखर अपने माँ-बाप को भूल रहा है । तुम्हीं सोचो, अपने इकलौते पुत्र के न दिखाई देनेपर बेचारे वृद्ध माता-पिता के दिल पर क्या गुज़र रही होगी । मैं अभी उनसे मिलकर आया हूँ । गुणशेखर को ढूँढ़ने के लिए कुएँ में उतरने को कोई तैयार नहीं । सब घबरा रहे थे । इसलिए साहस करके मैं चला आया । बेचारे माँ-बाप अपने इकलौते पुत्र के विरह में रो रहे हैं । सुंदरी, तुम्हीं इसे समझो और गुणशेखर को अपने माँ-बाप के पास भेज दो । ''

युवती ने उत्तर दिया - ''आप जो कुछ कह रहे हैं, ठीक ही है । पर मैं अगर भूलोक में प्रवेश करूँगी तो अपना दिव्यत्व खोकर एक साधारण स्त्री बन जाऊँगी । इस लिए अगर गुणशेखर स्वयं जाकर अपने माँ-बाप को देख आये तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है । ''

युवती की अनुमति पाकर धीरसिंह गुणशेखर को साथ लिये वहाँ से निकला । जिस मार्ग से वह अन्दर आया था, उसी मार्ग से बाहर निकलकर वह ऊपर पहुँच गया ।

धीरसिंह और गुणशेखर को देख कुएँ पर जमा हुए लोगों को बड़ा आश्चर्य और आनन्द हुआ । वृद्ध माता-पिता के आनन्द की कोई सीमा न रही । धीरसिंह के साहस, पराक्रम और परोपकार की प्रशंसा करते हुए लोगों ने उसे हार्दिक धन्यवाद दिये ।

अब धीरसिंह ने अपनी यात्रा फिर आगे चालू की । तीन दिन लगातार चलकर अब

वह एक और नगर में पहुँचा । वहाँ उसकी एक वृद्ध से मुलाकात हुई । धीरसिंह ने उस वृद्ध से गुलाब-जल वाले माया-सरोवर के बारे में पूछा । बुजुर्ग ने उसे समझाकर कहा - "देखो, आज तक जो उस सरोवर के दर्शन करने गये हैं, उनमें से एक भी वापस नहीं आया है । वहाँ जाने का मतलब है आत्महत्या करना ।" पर धीरसिंह अविचल रहा और उसने सरोवर तक पहुँचने का मार्ग बताने की वृद्ध से प्रार्थना की । अन्त में वृद्ध ने कहा - "इस नगर के दक्षिण द्वार से बाहर निकलकर दस मील तक चलोगे तो वह रास्ता दो भागों में बँट जाएगा । दाहिनी ओर की पगडंड़ी से चलो तो एक पहाड़ तक पहुँचोगे । पहाड़ के उस पार राजधानी नगर विरजापुर है । उस नगर का राजा गुलाब-जलवाले सरोवर का प्रशासक है । वह मणि-माणिक को प्राणों से भी अधिक प्यार करता है । अगर तुम उपहार-स्वरूप कुछ माणिक राजा को समर्पित कर उसके स्नेह-पात्र बन सको, तो तुम्हारा कार्य सफल हो सकता है । " इस सलाह के साथ धीरसिंह को शुभाशीर्वाद दे वृद्ध अपने रास्ते चला गया ।

वृद्ध के बताये मार्ग पर धीरसिंह चल पड़ा । पहाड़ पार करते उसे कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा । आखिर वह विरजानगर पहुँच गया । उसने राजा के दर्शन किये और मूल्यवान मणि उपहार में दिये । राजा धीरसिंह के व्यवहार से प्रसन्न हुआ और उसने प्रेम से कहा - "तुम रोज़ मुझे मणियों का उपहार दे रहे हो, मुझसे अगर तुम कुछ चाहते हो तो बिना संकोच माँग लो । "

धीरसिंह ने विनयपूर्वक निवेदन किया - "महाराज, मैं तभी आपसे कुछ माँगूँगा, जब आप मुझे आश्वासन देंगे कि आप निश्चय ही मेरी कामना-पूर्ति करेंगे । कृपया अन्यथा न समझें । "

"बिलकुल संकोच न करना युवक । तुम जो भी माँगो मैं अवश्यमेव दूँगा । यह राजा का वचन है । " राजा ने धीरसिंह को आश्वस्त किया ।

"तो फिर महाराज, गुलाब-जलवाले माया-सरोवर को देखते की अनुमति दे देंगे ?" धीरसिंह ने निर्भय हो पूछा ।

धीरसिंह की अनोखी इच्छा जानकर राजा

को आश्चर्य हुआ । राजा ने उसे समझाया - "लगता है, तुम्हारे शत्रुओं ने माया-सरोवर देखने की इच्छा तुम्हारे मन में जमाई है । क्योंकि उस माया में फँसकर आज तक कोई व्यक्ति लौट नहीं आया है । मैं चाहता हूँ, तुम अपनी यह इच्छा छोड़ दो, यही बेहतर है । "

पर धीरसिंह अपनी बात पर अटल रहा । तब विवश हो राजाने अपने दो सिपाहियों को बुलाकर आदेश दिया - "इस युवक को गुलाब-जलवाले माया-सरोवर के पास ले जाओ । देखने दो उसे सारा तमाशा । "

सिपाहियों के साथ धीरसिंह चला । नगर की दक्षिण दिशा में थोड़ी दूर पर एक विशाल द्वार था, जहाँ चार सिपाही पहरा दे रहे थे । द्वार के पास एक सूचना-फलक था, जिस पर लिखा था - "जिसको अपने प्राणों के प्रति मोह हो, ऐसा व्यक्ति अन्दर प्रवेश न करे । "

पहरेदारों ने किवाड़ खोल दिये । धीरसिंह ने ज्यों ही प्रवेश किया, किवाड़ अपने आप बन्द हो गये । धीरसिंह ने तीन कदम आगे चलकर पीछे मुड़कर देखा । वहाँ पर न किवाड़ थे, न दीवारें; चारों तरफ बस विशाल मैदान फैला हुआ था । थोड़ी देर बाद लंबे बालोंवाला एक विचित्राकृति व्यक्ति सामने आया । उसने धीरसिंह को प्रणाम किया और अपना परिचय कराया - "जो लोग यहाँ आते हैं, उनको गुलाब-जलवाले सरोवर का स्नान कराना मेरा काम है । "

धीरसिंह उसके पीछे हो लिया । ज़रा आगे जाने पर एक विशाल भवन दिखाई दिया, उस भवन के मध्य में सुगंध बिखेरनेवाला गुलाब-जलवाला सरोवर धीरसिंह ने देखा । सरोवर की ओर निर्देश करते हुए उस आदमी ने धीरसिंह से कहा - "तुम इस जलाशय में उतर

कर सीधे उसके मध्य में चले जाओ । मैं भी चलूँगा तुम्हारे साथ । घबराना नहीं । ''

धीरसिंह बेखटके सरोवर में उतर पड़ा । घुटनों तक पानी था । विचित्राकृति व्यक्ति किनारे पर रखा लोटा लेकर पानी में घुस पड़ा, और धीरसिंह के सिर पर तीर लोटे पानी डाला । तीसरे लोटे का पानी धीरसिंह के सिर पर डालते ही वह विचित्र व्यक्ति गायब हो गया । धीरसिंह ने देखा सरोवर में पानी बढ़ रहा है, जो बढ़ते बढ़ते उसके गले तक पहुँचा । उसने ऊपर देखा, एक जंज़ीर-सी लटक रही थी । एक ही छलाँग में धीरसिंह ने उस जंज़ीर को पकड़ लिया । दूसरे ही क्षण 'ढाम्' की आवाज़ सुनायी दी । चारों तरफ गहरा अंधेरा छा गया । धीरसिंह ने इधर-उधर देखा - वहाँ पर न कोई भवन था, न गुलाब-जलवाला सरोवर । वह एक मैदान पर खड़ा था, जहाँ हरी घास लहलहा रही थी । आश्चर्य करते हुए वह थोड़ा आगे बढ़ा । अब उसे छोटा-सा पर ऊँचा मंडप दिखाई दिया । उसके चारों तरफ अनगिनत संगमरमर की मूर्तियाँ थीं । मण्डप से थोड़ी दूर पर एक समतल चट्टान पर उसने एक धनुष्य और बाणों से भरे तीन तरकस देखे ।

धीरसिंह धीरे धीरे मण्डप के पास पहुँचा । मण्डप के मध्य में एक सोने का पिंजड़ा लटक रहा था । पिंजड़े में एक पाँच रंगोंवाला तोता था । मण्डप की दीवार पर लगे फलक पर सूचना लिखी थी -

"पाँच सौ वर्ष पहले महाराजा अमरतेज यहाँ शिकार खेलने आये थे । उनको यहाँ पर अपूर्व जीव-मणि प्राप्त हुई । अपने पश्चात् वह मणि सुयोग्य व्यक्ति को ही प्राप्त हो, इस लिए अपनी माया-शक्ति के बल पर उन्होंने गुलाब-जलवाला सरोवर तथा इस प्रदेश को निर्मित किया, और मणि की सुरक्षा की व्यवस्था की । चट्टान पर रखे धनुष्य को लेकर जो व्यक्ति पिंजड़े में बन्दी बने तोते की बाईं आँख को ठीक मारेगा, वही इस माया पर विजय करके जीव-मणि को प्राप्त कर सकेगा । अन्यथा वह संगमरमर की प्रतिमा के रूप में परिवर्तित हो जाएगा । ''

धीरसिंह ने उसी क्षण चट्टान से धनुष्य को उठाया और उस पर तीर चढ़ाकर तोते की आँख का निशाना बनाया, पर निशाना चूक

गया । तब वह घुटनों तक शिला के रूप में बदल गया । फिर उसने तुरन्त दूसरा बाण छोड़ दिया, पर वह भी बेकार । अब वह कमर तक शिला बन गया । इधर पिंजड़े का तोता खिलखिलाकर हँस पड़ा और उपहास करते हुए बोला – "धीरसिंह, तुम बेकार यह कोशिश क्यों कर रहे हो ? मुझे मारना तुम्हारे लिए कभी संभव नहीं है, समझे ?"

धीरसिंह ने आत्म-विश्वास के साथ तीसरी बार निशाना साध कर बाण छोड़ दिया । इस बार बाण सीधा जाकर तोते की बाईं आँख में जाकर घुसा । गाज गिरने की-सी आवाज़ हुई । थोड़ी देर के लिए बादलों का गर्जन और बिजली की कड़कड़ाहट से यों लगा कि पृथ्वी काँप रही हो । कुछ क्षण न मंडप दिखाई दिया और न पिंजड़ा । फिर वह प्रदेश स्वच्छ चाँदनी से भर गया । धीरसिंह ने उस अपूर्व जीव-मणि के दर्शन किये, उसकी आँखें चौंधिया गईं । धीरसिंह ने मणि हाथ में लेकर संगमरमर की मूर्तियों को स्पर्श किया । तत्काल वे सभी मूर्तियाँ राजकुमारों के रूप में बदल गईं । उन्हें माया से मुक्त करनेके उपलक्ष्य में राजकुमारों ने धीरसिंह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की । और वे सभी अपने अपने देशों के लिए रवाना हो गये ।

धीरसिंह अपने प्रयास में सफल होकर खुशी खुशी विदिशा नगर लौट आया । सुलोचना के पास जाकर गुलाब-जलवाले माया-सरोवर तक पहुँचने के लिए उसने जिन विघ्न-बाधाओं का सामना किया, उनका पूरा वृत्त सुनाया । उसने सुलोचना को यह भी बताया कि उसके कारण माया सरोवर के कई राजकुमार माया मुक्त हो गये हैं । सुलोचना ने कहा – "तुम्हारा कथन सत्य है । तुम्हारे इस सत्प्रयास के कारण जो राजकुमार माया से मुक्त हो गये, वे सर्वत्र तुम्हारी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं । अब तुम कल आओ तो मेरा पाँचवाँ और अंतिम सवाल मैं तुम से पूछूँगी ।"

सुलोचना ने मुस्कुराते हुए धीरसिंह को बिदा किया ।

(अगले अंक में समाप्त)
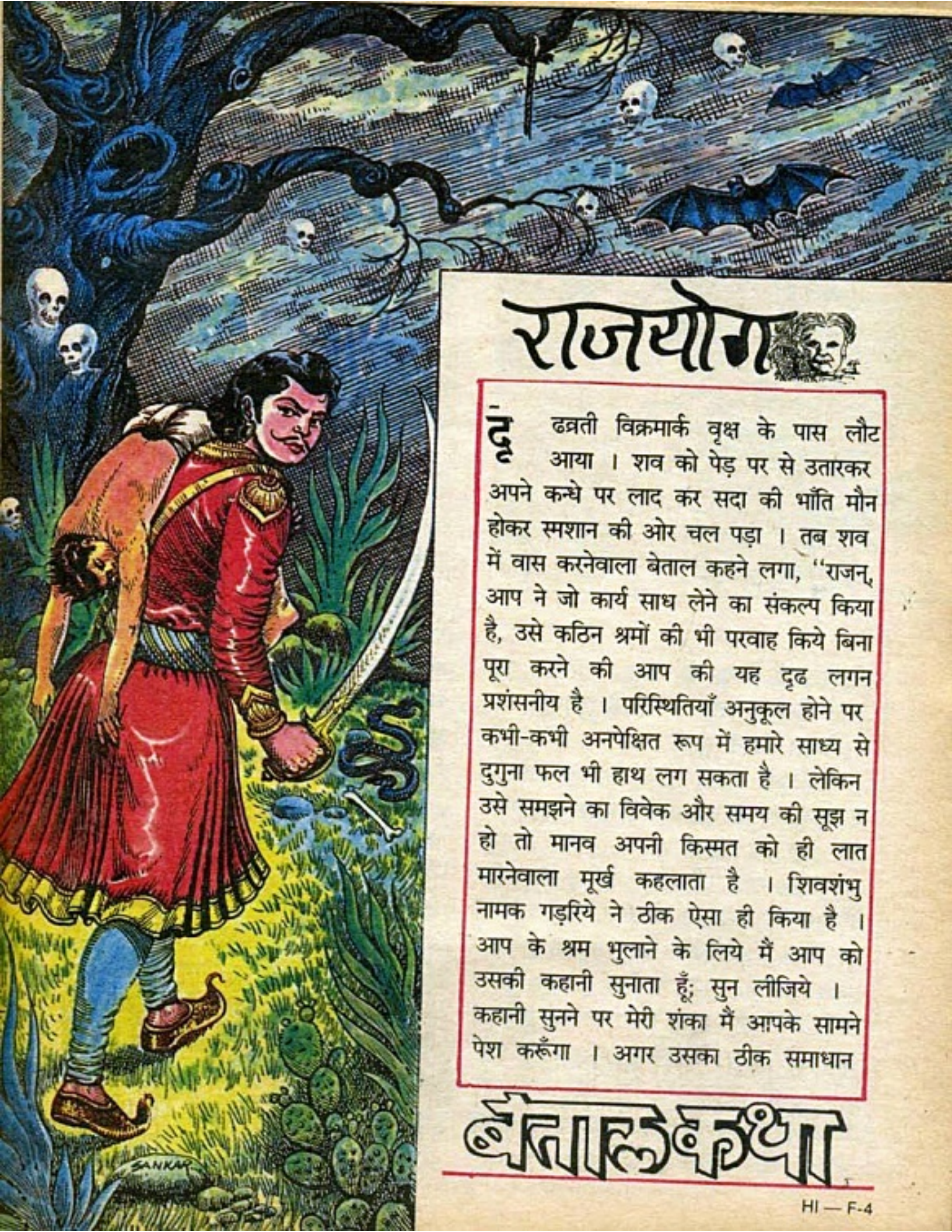
राजयोग

दृढव्रती विक्रमार्क वृक्ष के पास लौट आया । शव को पेड़ पर से उतारकर अपने कन्धे पर लाद कर सदा की भाँति मौन होकर स्मशान की ओर चल पड़ा । तब शव में वास करनेवाला बेताल कहने लगा, ''राजन्, आप ने जो कार्य साध लेने का संकल्प किया है, उसे कठिन श्रमों की भी परवाह किये बिना पूरा करने की आप की यह दृढ लगन प्रशंसनीय है । परिस्थितियाँ अनुकूल होने पर कभी-कभी अनपेक्षित रूप में हमारे साध्य से दुगुना फल भी हाथ लग सकता है । लेकिन उसे समझने का विवेक और समय की सूझ न हो तो मानव अपनी किस्मत को ही लात मारनेवाला मूर्ख कहलाता है । शिवशंभु नामक गड़रिये ने ठीक ऐसा ही किया है । आप के श्रम भुलाने के लिये मैं आप को उसकी कहानी सुनाता हूँ; सुन लीजिये । कहानी सुनने पर मेरी शंका मैं आपके सामने पेश करूँगा । अगर उसका ठीक समाधान

बेताल कथा

आपने नहीं किया तो उसका परिणाम आप जानते ही हैं । इस लिए गौर से सुनिए । ''

बेताल कहानी सुनाने लगा :

शान्तिपुरी नामक राज्य के एक गाँव में शिवशंभू नाम का एक गड़रिया युवक रहता था । वह बड़ा ही बहादुर था । उसको अपना कहनेवाला कोई नहीं था । हररोज़ वह गाँव के निवासियों की भेड़ बकरियाँ चराने गाँव से दूर स्थित पहाड़ तक ले जाता था । वह पहाड़ वहाँ के सर्पों के लिए मशहूर था । कभी कभी साँप अपना बसेरा छोड़कर नीचे भी आ जाते । पर शिवशंभु उनसे उरता नहीं था । वह जानता था कि साँप उन्हीं को काटते हैं, जो उनपर पत्थर फेंकते हैं या उनको कुछ नुकसान पहुँचाते हैं ।

एक दिन शिवशंभू पहाड़ की तलहटी में भेड़ें चरा रहा था, तब उसने देखा कि एक मुनि पहाड़ से उतर कर नीचे चला आ रहा है । उस पहाड़ पर कभी कोई चढ़ने की हिम्मत नहीं करता था, क्योंकि उसमें ज़हरीले साँपों से भरी कँटीली झाड़ियाँ ही खूब थीं । ऐसे पहाड़ पर से वह मुनि इस प्रकार चल रहा था, जैसे फूलों की सेज पर चलता आ रहा हो । यह देख शिवशंभू आश्चर्य में आ गया ।

पहाड़ पर से उतर कर जाता हुआ वह मुनि शिवशंभू की ओर देख मुस्कुराया । अपने दोनों हाथ जोड़कर शिवशंभू ने विनयपूर्वक उसे प्रणाम किया ।

आज तक कई दिन वह पहाड़ के नीचे बैठकर अपनी भेड़ें चराता आया था । अब तक किसी को पहाड़ से उतरते उसने नहीं देखा था । उसने सोचा यह मुनि सचमुच कोई महात्मा है । सामान्य मनुष्य की क्या मज़ाल कि उस पहाड़ पर कदम भी रखे ।

मुनि ने उस युवक को आशीर्वाद देकर कहा, "वत्स शिवशंभू, तुम्हें राजा बनने का योग है । महीने के अन्दर ही तुम किसी राज्य के राजा बन जाओगे । तैयार रहना । '' यह कहकर मुनि आगे बढ़कर चला गया ।

मुनि के वचन ने शिवशंभू को आश्चर्य में डाल दिया । ''एक सीदासादा गड़रिया, राजा कैसे बन सकता है भला !'' मगर थोड़ी देर सोचने के बाद उसे लगा, कि मुनि की बातें ज़रूर सत्य साबित होंगी । इन मुनियों में अद्‌भुत शक्तियाँ होती हैं । ये त्रिकालदर्शी

होते हैं । साधु की वाणी असत्य नहीं हो सकती । इस लिए मेरा राजा होता असंभव नही हो सकता । चलो, देख लें क्या होता है । उसने गाँव में जाकर यह समाचार कुछ लोगों को सुनाया । शिवशंभू को पागल समझकर उन लोगों ने उसकी हँसी उड़ायी ।

शरध नामक एक दर्ज़ी ने शिवशंभू का मज़ाक उडाने के ख्याल से कहा, "अरे शिव, तुम तो हमारे होनेवाले राजा हो, तुम्हें ऐसे फटे-पुराने कपड़े पहनकर घूमना नहीं चाहिये । तुम्हें राजसी पोशाक सी दूँगा, कपड़ा ला दो । फिर ज़रूर तुम्हारी किस्मत खुल जाएगी । "

शिवशंभू ने जो कुछ धन-संचय कर रखा था, वह सारा खर्च कर क़ीमती कपड़ा खरीदा और सिलाई के लिये दर्ज़ी के हाथ सौंप दिया ।

दर्ज़ी ने उसे राजोचित पोशाकें बना दीं । शिवशंभू उन वस्त्रों को पहनकर अब गाँव में इधर उधर घूमने लगा । उसका वेष देखकर गाँववाले परिहासपूर्वक हँसने लगे ।

मल्लवर्मा नामक एक पहलवान ने शिवशंभू से पूछा, "क्या तुम मल्लयुद्ध जानते हो ?"

शिवशंभू ने कहा, "नहीं । "

"तुम तलवार चलाना भी नहीं जानते । कम से कम तुम्हारे पास एक तलवार होनी चाहिये । वह भी नहीं है तुम्हारे पास ! कैसे राजा हो तुम भी !" पहलवान ने भी उसकी खिल्ली उड़ायी ।

इस पर शिवशंभू उस गाँव के निवासी विश्वशर्मा के यहाँ पहुँचा, जो युवकों को लाठी व तलवार चलाना सिखाया करता था । उसने

विश्वशर्मा से कहा, "मैं एक राजा बननेवाला हूँ और इसीलिये तलवार चलाना जानना चाहता हूँ । "

शिवशंभू ने तो अपना सारा पैसा खर्च कर के राजसी पोशाकें बनवायी थीं; अब तलवार कैसे प्राप्त करें ? यह विचार करता हुआ वह लुहार भैरव के पास पहुँचा और उसने पूछा, "सुनो भैरव, मैं शीघ्र ही राजा बननेवाला हूँ । मेरे लिये एक बढ़िया तलवार बनवा दो । राजा बनते ही मैं तुम्हें एक अच्छा सा पुरस्कार दे दूँगा । "

भैरव भी हँसकर बोला, "शिवशंभू, सुनो ! मेरी छः भेड़ें खो गयी हैं, उन्हें ढूँढ़कर ला दो; तो मैं निश्चय ही तुम्हें एक तलवार बना दूँगा । " भैरव को विश्वास नहीं था कि

शिवशंभु उसका काम कर सकेगा । इस लिए उसने मज़ाक भर किया ।

शिवशंभू भेड़ों की खोज में गाँव से बहुत दूर निकल गया । आखिर इमली के एक बगीचे में भेड़ें दिखाई दीं । उन भेड़ों को हाँकता हुआ वह गाँव लौट रहा था, तब उस रास्ते से गुज़रता हुआ एक रथ उसे दिखाई दिया ।

उस रथ में शान्तिपुरी राज्य की युवराज्ञी नलन्दा अपनी साखियों के साथ कहीं जा रही थी । उसने देखा, एक राजा वेषधारी आदमी भेड़ें हाँकता हुआ जा रहा है; तो उसने अपना रथ रुकवाया; और नीचे उतरकर हँसते हुए उस से पूछा, "तुम किस देश के राजकुमार हो ? इस प्रकार भेड़ों को हाँकते कहाँ जा रहे हो ? "

युवरानी के सौंदर्य पर मुग्ध शिवशंभू ने निडरता से कहा, "मैं इस वक्त किसी देश का राजकुमार नहीं हूँ, मगर एक ही महीने के अन्दर मैं ज़रूर राजा बननेवाला हूँ । मेरे राजा बनने के बाद मैं तुम से शादी करना चाहूँगा । तुम्हें मंजूर है न ? "

शिवशंभू की बातें सुनकर युवरानी क्रोध में आ गयी और उसने अपने भटों को आदेश दिया, "इस मूर्ख को बन्दी बना लाओ । " और वह फिर से रथ पर सवार हो गयी ।

इसपर राजभट शिवशंभू के हाथ बाँधकर उसे अपने साथ ले गये । थोड़ी दूर जाने पर उनके सामने से कराबन्दी नामक पर्वताकृति राक्षस आ गुज़रा । उसके सिरपर मुकुट था । बदन पर सुवर्ण-आभूषण लदे हुए थे । कमर में तलवार लटक रही थी और बायें हाथ में रत्नजटित गदा सुशोभित थी ।

उस भीमकाय राक्षस को देखते ही राजभट,

युवरानी की सखियाँ तथा रथ का सारथी भी भाग गये ।

हाथ बन्धे हुए शिवशंभू से राक्षस कराबन्दी ने पूछा, "हे मानव, तुम ने कौनसा अपराध किया है बोलो, जो इस तरह तुम्हारे हाथ बँधे हुए हैं ? "

शिवशंभू ने निडरता से कहा, "मैं ने कोई भी अपराध नहीं किया है । "और इस उत्तर के साथ उसने अपनी पूरी कहानी राक्षस को सुना दी ।

वह कहानी सुनकर कराबन्दी ने नलन्दा से कहा, "युवरानी, मैं कराबन्दी नामक राक्षस राजा हूँ । भूलोक की सारी अच्छाइयों का ज्ञान प्राप्त कर उन का हमारे लोक में उपयोग करूँ इस आशा से मैं यहाँ आया हूँ । अदृश्य रूप में रहकर इस युवक को मुनि से आशीर्वाद पाना आदि सारी बातें मैं ने परख ली हैं । उसने तुम से जो बातें की, उन में मुझे तो कोई दोष नज़र नहीं आ रहा है । उसने तो बस इतना ही कहा है, कि जब वह राजा बनेगा, तब तुम्हें स्वीकार हो तो तुम्हारे साथ शादी करेगा । उसने ज़बरदस्ती तो नहीं की ? तुम उसपर इतनी गुस्सा क्यों हो गयी ? "

नलन्दा ने गुस्से में कहा, "वह एक मामूली गड़रिया है, और मैं राजकुमारी हूँ । कुछ दिन पूर्व अचानक मेरे पिताजी का स्वर्गवास हो गया और मैं इस राज्य की शासिका बन गयी हूँ । इस युवक में नाम मात्र के लिये भी वीर होने के लक्षण नहीं हैं । ऐसी हालत में इसकी मेरे साथ विवाह करने की कामना भी अपराध ही है । "

यह सुनकर राक्षस हँस पडा और बोला,

"अगर किसी युवक में दृढ लगन तथा कार्यप्रवणता हो तो उसे वीर के रूप में बदलने में देर ही कितनी लगती है ? मैं एक पखवाड़े के अन्दर इसे एक महावीर बना सकता हूँ । अब ऐसी हालत में क्या तुम इससे शादी करोगी ? "

पल भर मौन रहकर नलन्दा बोली, "मेरे राज्य पर सिंहपुरी के राजा विक्रमसिंह ने अन्यायपूर्वक आक्रमण किया है । यह युवक अगर विक्रमसिंह को पराजित करेगा, तो निश्चय ही मैं इसके साथ शादी करूँगी । "

राक्षस ने स्वीकृति में सिर हिलाया । इसके बाद नलन्दा वहाँ से चली गयी । एक पखवाड़े के अन्दर ही राक्षस ने शिवशंभु को गदायुद्ध, धनुर्विद्या, खड्गयुद्ध इत्यादि सारी विद्याओं में प्रशिक्षित किया ।

बाद में राक्षस और शिवशंभु दोनों मिलकर विक्रमसिंह के पास पहुँचे, जहाँ वह अपनी सेना के साथ डेरा डालकर बैठा हुआ था । राक्षस को देखकर विक्रमसिंह की सेना तितर-बितर हो गयी । मगर विक्रमसिंहने तलवार खींचकर शिवशंभु पर हमला किया । थोड़ी देर दोनों के बीच लड़ाई होती रही । इस बीच शिवशंभु ने विक्रम की तलवार पर ही वार किया और वह दूर जा गिरी । विक्रमसिंह निःशस्त्र होकर घोड़े पर भाग खड़ा हुआ ।

दूसरे दिन शिवशंभु को साथ लेकर राक्षस नलन्दा के पास जाकर बोला - "युवरानी, शिवशंभु ने विक्रमसिंह को पराजित किया है । "

"विक्रमसिंह को पराजित करने का श्रेय शिवशंभु को नहीं मिलता है । असल में सेना तुम्हें देखकर भाग गयी है । ऐसी घबराहट में विक्रमसिंह को पराजित करना कोई बड़ी बात नहीं है । " नलन्दा कह उठी ।

"तुम तो बड़ी अक्लमन्द हो । मगर अपने राजनीति-तन्त्र का हम पर प्रयोग मत करो । " राक्षस बोला ।

नलन्दा इसपर कुछ कहे, इतने में एक राजभट वहाँ पहुँचा और उसने ज़ाहिर किया, "महारानीजी, विक्रमसिंह घोड़े पर से गिर कर मर गये हैं । उसके दुष्ट शासन से त्रस्त मन्त्री, राज्य के पदाधिकारी तथा प्रमुख व्यक्ति - सब ने मिलकर विक्रमसिंह को पराजित करनेवाले शिवशंभु को अपना राजा बनाने का निर्णय कर

लिया है । यह समाचार अभी अभी प्राप्त हुआ है । ''

यह वृत्तान्त सुन नलन्दा शिवशंभु की ओर लज्जा से देखती हुई बोली, ''अब तुम्हारे साथ विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है । ''

राक्षस अट्टहास कर बोला, ''मुझे लगता है कि हम राक्षस लोग, तुम मानव लोगों से कहीं अधिक उदार हैं । '' फिर शिवशंभु की ओर मुड़ कर उसने पूछा, ''शिव, तुम्हें युवरानी के साथ विवाह करने में कोई आपत्ति तो नहीं है न ? ''

''मैं इस युवरानी के साथ विवाह करना बिलकुल नहीं चाहता । '' शिवशंभु ने दृढ स्वर में उत्तर दिया ।

शिवशंभु की पीठ ठोकते हुए राक्षस ने कहा, ''शाबाश मानव ! तुम्हारा निर्णय एकदम विवेकपूर्ण है । तुम एक राजा का स्थान ग्रहण करने योग्य ज़रूर हो । '' इतना कहकर राक्षस वहाँ से चला गया ।

कहानी सुनाकर बेताल ने कहा, ''राजन्, अगर शिवशंभु नलन्दा के साथ विवाह करता, तो वह सिंहपुरी के साथ शान्तिपुरी का भी राजा बन सकता था न ? ऐसे मौके से हाथ धो बैठना क्या उसकी मूर्खता नहीं है ? इस सन्देह का उत्तर जानते हुए भी न दो, तो तुम्हारा मस्तक शतशः विदीर्ण हो जाएगा । ''

इसके उत्तर मे विक्रमार्क ने कहा, ''नलन्दा अत्यन्त स्वार्थी है । आक्रमण करने आनेवाले विक्रमसिंह को पराजित कर शिवशंभु ने उसका राज्य बचाया । तिसपर भी कुछ निराधार बहाना बनाकर नलन्दा ने उसके साथ विवाह करना नामंजूर किया । लेकिन उसने जब सुना कि शिवशंभु सिंहपुरी का राजा बन रहा है, तब निस्संकोच वह उसी विवाह को राज़ी हो गयी । शिवशंभु ने उस की स्वार्थ - परायणता और अधिकार लालसा को भाँप लिया और उसके साथ विवाह करने से साफ़ इन्कार किया ।

यह उत्तर देकर राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर उसी वृक्ष पर जा बैठा ।

(कल्पित)
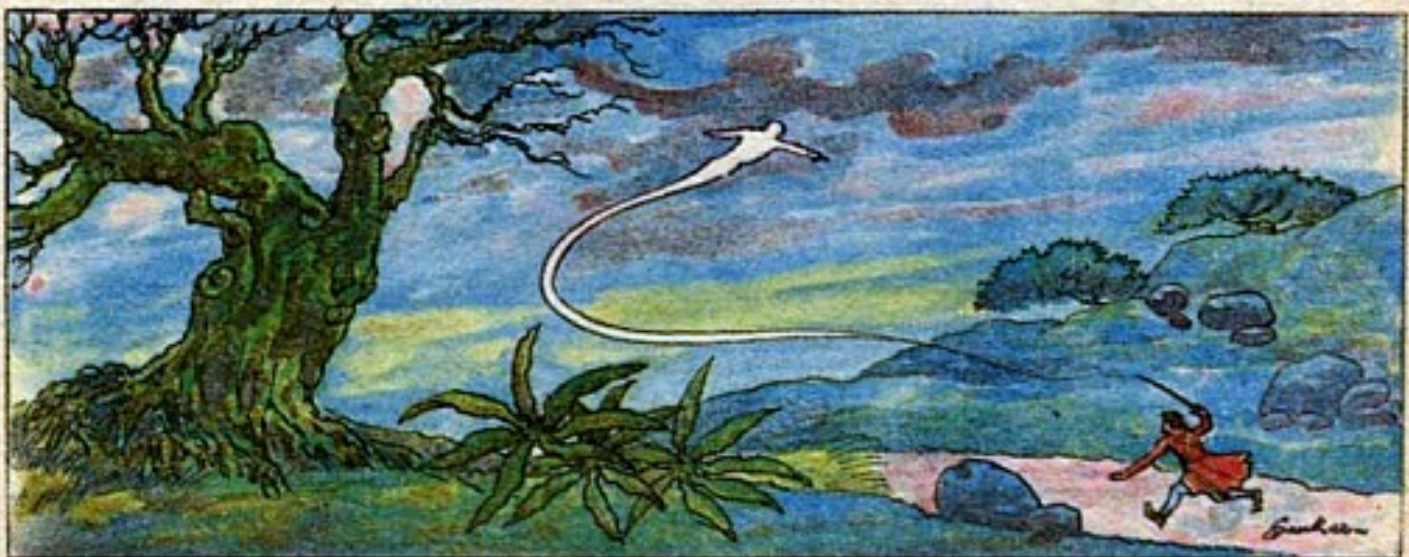
सौतेली माँ

साहित्य में अभिरुचि रखनेवाली एक स्त्री ने अपने सौतेले पुत्र को सगे पुत्र से भी बढ़कर प्यार दिया उसे पाल-पोसकर बड़ा किया । माँ की देखरेख में लड़का एक महान कवि बन गया ।

सौतेली माताओं के अत्याचारों की कड़ी आलोचना करते हुए इस कवि ने जो व्यंग्य-काव्य रचा, वह बड़ा ही लोकप्रिय हुआ । राजा ने भी कवि का अभिनन्दन करते हुए बड़ा पुरस्कार प्रदान किया । सम्मान पाकर घर लौटते ही कवि ने अपनी सौतेली माँ के चरणों में प्रणाम किया ।

सौतेली माँ, "बेटे इस संसार में सौतेली माताओं के प्रति वैसे ही बुरी धारणा है । मगर मैं ने तो तुम्हें खूब लाड़-प्यार से पाला है न ? तो सौतेली माताओं पर ऐसा काव्य लिखना क्या तुम्हें शोभा देता है ?" कहते हुए बेचारी रो पड़ी ।

"माँ, मुझे क्षमा करो । संसार की सभी सौतेली माएँ तुम जैसी होती तो मैं यह काव्य लिख नहीं पाता । साहित्य के कारण ही तुम सुसंस्कृत होकर देवी के रूप में बदल गयी हो । पर बताओ, अन्य सौतेली माताओं की करनी को क्या कहें ?" यह कहते हुए कवि ने अपनी माँ के आँसू पोंछ डाले ।
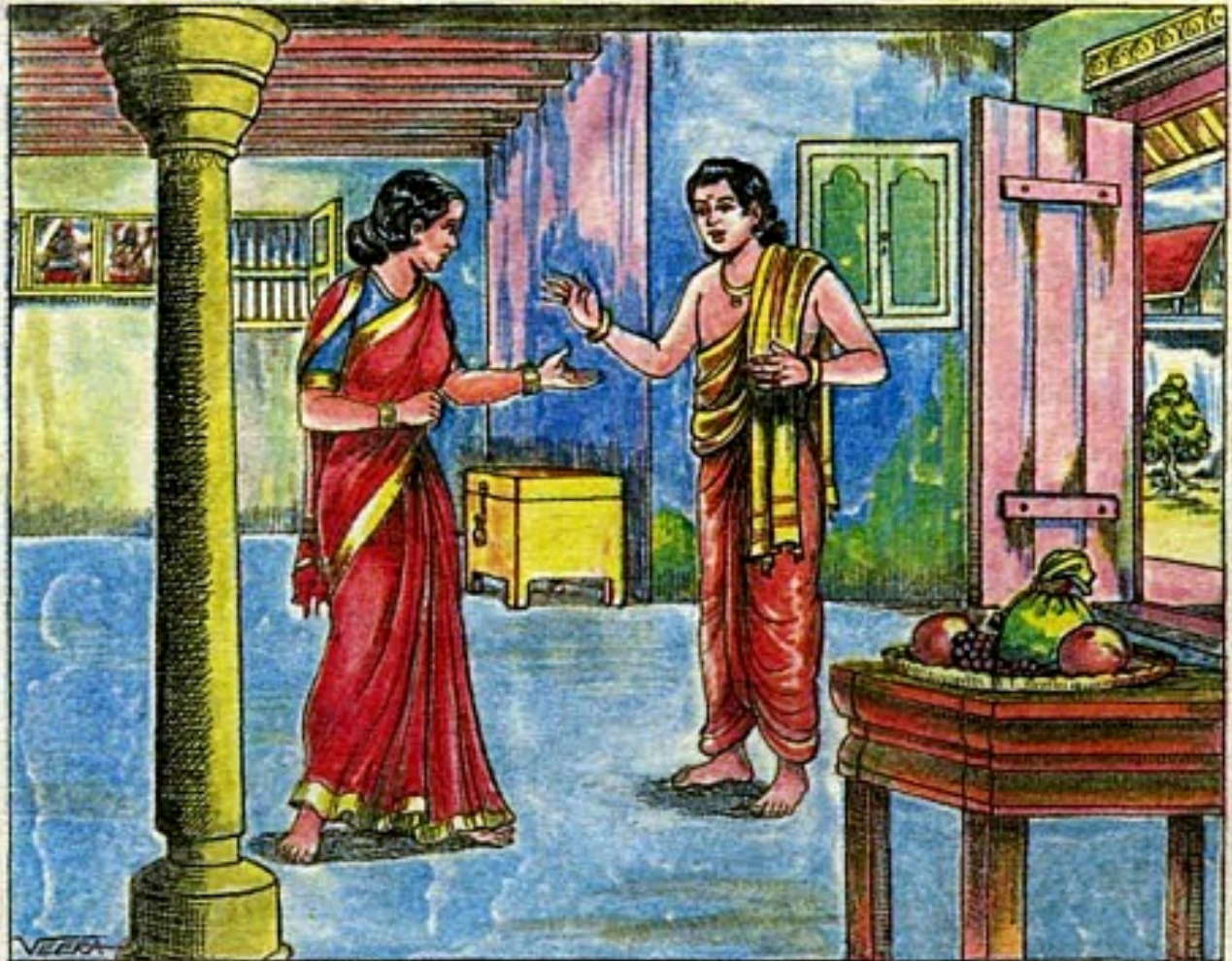
चन्दामामा पुरवणी - ६

ज्ञान का ख़ज़ाना

इस मास का ऐतिहासिक व्यक्तित्व

तेग़ बहादुर

सन १६२१ की पहली अप्रैल के दिन तेग़ बहादुर अमृतसर में पैदा हुए । वे सिक्खों के नौवें गुरु थे । छठे गुरु हरगोविन्द के वे सुपुत्र थे । बचपन से ही उनको कई विषयों में रुचि थी । सन १६६४ में गुरु हरि किशन की मृत्यु के उपरान्त तेग़ बहादुर गुरु बने । उन्होंने कई स्थानों की यात्रा की और प्रार्थना - सभाओं का आयोजन किया । उन्होंने आनन्दपुर नामक एक नये नगर की स्थापना की ।

उस समय मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब का आतंक सर्वत्र छाया हुआ था । वह ब्राह्मणों को ज़बरदस्ती मुस्लीम बनाने की कोशिश करता । कुछ लोगों ने गुरु तेग़ बहादुर से अपनी सुरक्षा की याचना की । गुरु के कहने पर उन्होंने औरंगज़ेब को बताया कि वे मुस्लिम धर्म का स्वीकार करेंगे, बशर्ते कि औरंगज़ेब तेग बहादुर को इस्लाम का अनुयायी बना दें । औरंगज़ेब ने गुरु को गिरफ्तार किया और उनको बताया कि या तो वे इस्लाम को स्वीकार करें या कोई चमत्कार करके दिखा दें । गुरु तेग़ बहादुर ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया । ११ नवंबर, १६७५ को उनको मार डाला गया ।

वह कौन ?

एक युवक सार्वजनिक सड़क को छोड़ वीरान खेत से गुज़र रहा था । सच बात तो यह थी कि राजा के सिपाही उसे ढूँढ़ रहे थे । राजा उस पर बहुत गुस्सा हुआ था ।

उसने एक स्थान पर एक दुबले-पतले, नंग-धड़ंग ब्राह्मण को देखा । तेज़ धारवाली एक घास के मूल में वह पानी सींच रहा था ।

युवक ने पूछा - "यह तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं यह मीठा पानी इस घास की जड़ों में दे रहा हूँ, ताकि चीटियाँ उधर आकर्षित होकर जड़ों को खा डालें ।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया ।

"पर क्यों ?" जिज्ञासावश युवक ने पूछा ।

"क्यों कि इनमें से एक पत्ते ने मेरी आत्मा को ज़रव्मी बनाया । खून निकला उससे ! मुझे इसका सर्वनाश करना है !" ब्राह्मण ने युवक को समझाकर कहा ।

युवक को यह ब्राह्मण बड़े निश्चयी स्वभाव का लगा । राजा ने ब्राह्मण को भी अपमानित किया था । दोनों एक दूसरे के दोस्त बन गये ।

यद्यपि यह केवल एक लोककथा है, इस प्रकार के ब्राह्मण अत्र-तत्र दिखाई देते हैं । यह कौन था ? (उत्तर पृष्ठ ८ पर)

विज्ञान का आनन्द
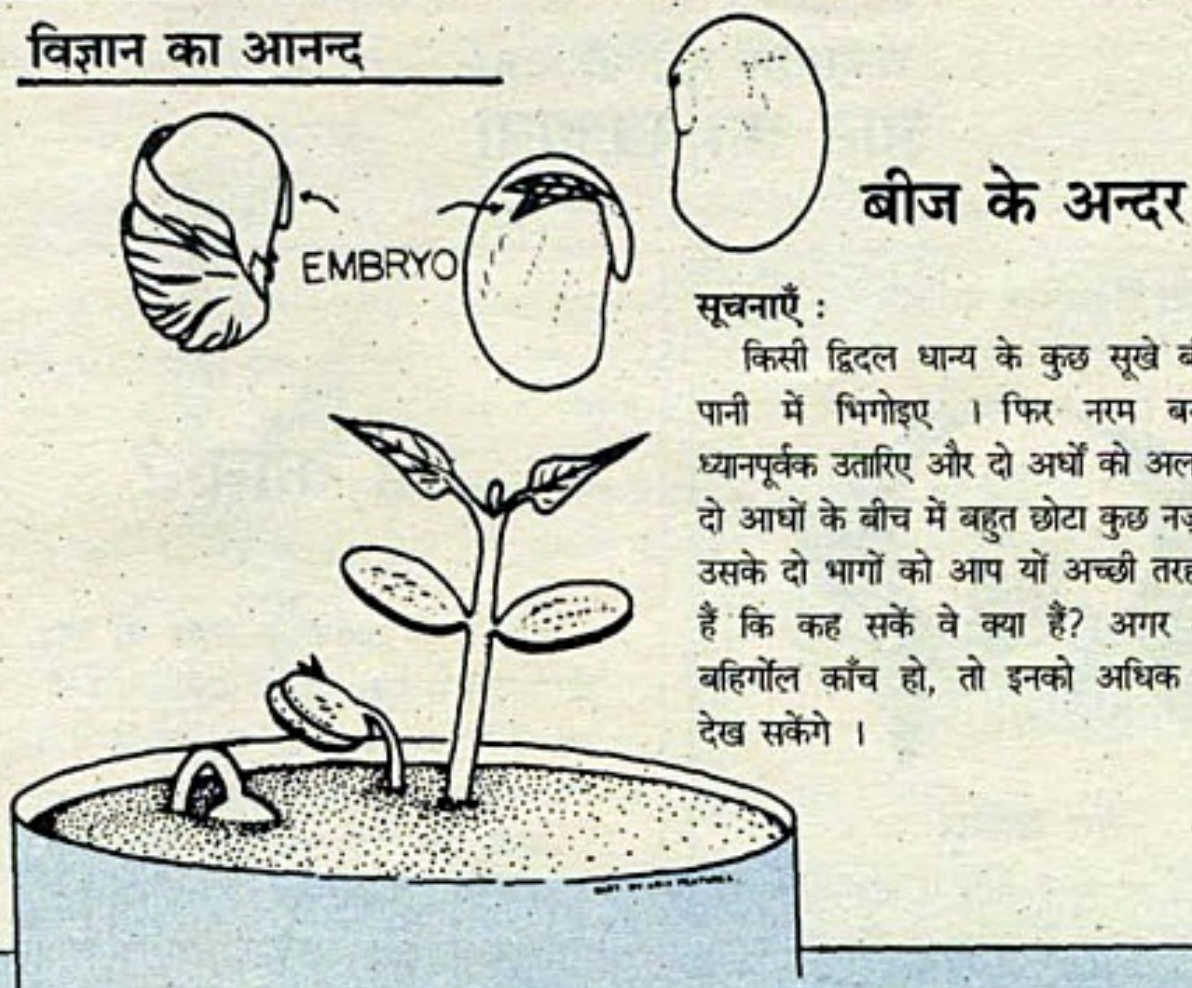
बीज के अन्दर

सूचनाएँ :

किसी द्विदल धान्य के कुछ सूखे बीज रात भर पानी में भिगोइए । फिर नरम बना छिलका ध्यानपूर्वक उतारिए और दो अर्धों को अलग कीजिए । दो आधों के बीच में बहुत छोटा कुछ नज़र आता है? उसके दो भागों को आप यों अच्छी तरह देख सकते हैं कि कह सकें वे क्या हैं? अगर आपके पास बहिर्गोल काँच हो, तो इनको अधिक अच्छी तरह देख सकेंगे ।

क्या होता है और क्यों ?

बीज के दो अर्धों के बीच में एक छोटा अविकसित पौधा है । इसे कहते हैं गर्भस्थ मूल । अगर ज़रा बारीकी से देखे तो आप उसमें दो बहुत छोटे पत्ते और एक तने जैसा हिस्सा देखेंगे । अगर आपकी दृष्टि अच्छी हो या अगर आप बहिर्गोल काँच में से देखें तो आपको पत्तों में नसें नज़र आएँगी । शायद आपने मूँगफल्ली के दानों में गर्भस्थ मूल देखे होंगे और खाते समय सोचा होगा कि ये क्या हैं । छोटे गर्भस्थ मूल के तने जैसे भाग को बारीकी से देखने पर मालूम होगा कि वह बीज के दो आधों से कहाँ जुड़ा है ? उसका गर्भस्थ मूल का विकास होता है तब तने जैसे हिस्से का तल उसका तना और प्रमुख जड़ बन जाते हैं, और बीज के दो अर्ध ज़मीन से बाहर आने पर दो मोटे भद्दे आकार के पत्ते-से दिखाई देते हैं । इनको बीज के पत्ते कहा जाता है, पर इनका प्रमुख कार्य है गर्भस्थ मूल स्वावलंबी होने तक उसे आहार देना ।

सभी द्विदल धान्य अण्डे के समान बीज होते हैं जिनमें गर्भस्थ मूल होता है । पर कई धानों में गर्भस्थ मूल इतने छोटे होते हैं कि यों देखे नहीं जा सकते । कुछ भीगे बीजों को ज़मीन में बोकर उनके विकास को अपनी आँखों से क्यों न देखें ?

सभी बीजों में द्विदल धान्य के समान दो अर्ध नहीं होते पर कुछ में होते भी हैं । मूँगफल्ली के दाने के समान दो अर्धवाले कितने बीज आप ढूँढ़ निकाल सकते हैं ?

हेलिकार्नेसस की विशाल कब्र

दो हज़ार पाँच सौ वर्ष पहले या उससे पहले एजियन समुद्र के किनारे एक सुंदर शहर बसा था । उसका नाम था हेलिकार्नेसस । वह ग्रीक लोगों की एक कॉलनी थी । वहाँ एक शानदार स्मारक बनाया गया था । कॅरिक के राजा मौसोलस की कब्र पर विधवा रानी आर्टेमिसिया ने उसे बनवाया था । उस स्मारक के चारों तरफ जो खुला मैदान था वह ३०० फुट चौड़ा था । यह स्मारक एक शानदार स्थान था जो संसार के सात आश्चर्यों में गिना जाता था । यह स्मारक इ.पू. चौथी शताब्दी में बनाया गया था और इ.सन की चौथी शताब्दी में तुर्कों ने उसे ध्वस्त किया ।

संसार की महान् घटनाएँ
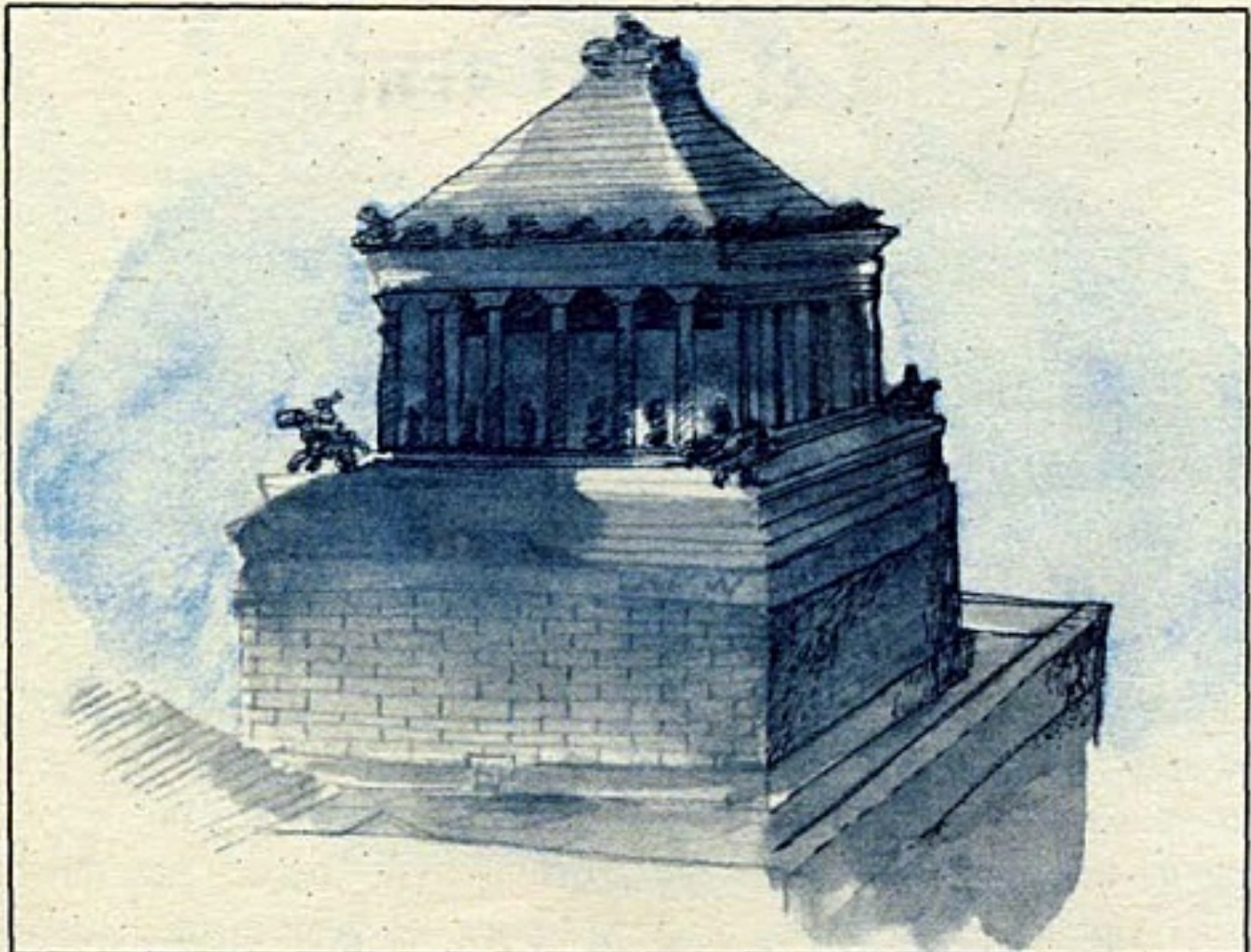
सब से अमीर राजा

हम्बल्ड

ईसा की छठी शताब्दी में एशिया मायनर के लिड़िया राज्य पर क्रोएसस् शासन करता था । माना जाता है कि वह संसार का सब से धनी आदमी था । आज तक क्रोएसस् धनी आदमी का पर्यायवाची शब्द माना गया है । 'क्रोएसस्-सा धनी' एक महावरा हो गया है जिसका अर्थ है बहुत अमीर । उन्हीं दिनों सलोन नाम का एक दार्शनिक भी वहाँ रहता था । एक दिन क्रोएसस् ने अपने को संसार का सब से सुखी आदमी कहा, क्यों कि धन और अधिकार के बल वह अपनी सभी इच्छाएँ पूरी कर सकता था । पर सलोन ने उसे चेतावनी दी - "कोई आदमी तब तक सुखी नहीं है जब तक मौत नहीं आती ?" क्रोएसस् को दार्शनिक का यह कथन जँचा नहीं ।

क्रोएसस् डेल्फी के धर्म-गुरुओं की भविष्य-वाणी में विश्वास करता था । वह पर्शिया पर आक्रमण करने की सोच रहा था । धर्मगुरु की भविष्यवाणी थी कि वह अगर पर्शिया पर आक्रमण करेगा तो एक संपोन्न देश का सर्वनाश होगा । क्रोएसस्

ने समझा कि पर्शिया का नाश होगा । उसने ४,२०,००० सैनिक और ६०,००० घुड-सवारों के साथ पर्शिया पर हमला किया, पर उसे पराजित होना पड़ा । लिड़िया का सर्वनाश हुआ । उसे बंदी बनाया गया । पर्शिया के राजा सायरस ने उसको ज़िंदा जलाने का आदेश दिया । उसको चिता तक ले जाया गया, तो उसने पुकारा – "ओ सलोन !" सायरस ने इसे सुना तो पूछा कि वह सलोन को क्यों याद कर रहा है ? क्रोएसस ने सायरस को दार्शनिक सलोन का कथन सुनाया और बताया वह कैसे सत्य है ।

सायरस को दया आई । क्रोएसस् को मार डालने के बदले उसे मित्र के रूप में स्वीकार किया ।

१. जो तीन गाँव आगे चल कर कलकत्ता बने उन्हें खरीदने में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कितना पैसा लगाया ?
२. उन्हें बेचनेवाला कौन था ?
३. कंपनी की तरफ़ से किसने उन्हें खरीदा ?
४. उन गाँवों के नाम क्या थे ?
५. ग्रीक इतिहासज्ञ टॉलेमी ने 'सात टापुओं का समूह' अर्थवाले हेप्टानेशिया का उल्लेख किया है । वह आजकल का कौनसा मशहूर शहर है ?
६. जो मुंबई के मालिक बने वे प्रथम विदेशी लोग कौन थे ?
७. किस सेनाधिकारी ने मुंबई पर कब्ज़ा किया और कब ?
८. उसने मुंबई पर कैसे कब्ज़ा किया ?
९. जो विकसित होने पर मद्रास शहर बन गया, उस ग्राम का नाम क्या है ?
१०. जहाँ दिल्ली बसी है, उस स्थान का सब से प्राचीन नाम कौनसा है ?

विज्ञान, खोज और आविष्कारों की दुनिया

१. सूर्यमाला में कितने ग्रह हैं ?
२. सभी ग्रहों में सब से बड़ा ग्रह कौन-सा है ?
३. सब से छोटा ग्रह कौन-सा है ?
४. सूर्य के निकटतम ग्रह कौन ?
५. दूरी की दृष्टि से पृथ्वी का सूर्य से क्या स्थान है ?
६. सूर्य-माला में ग्रहों को छोड़कर कुछ और भी है ?
७. हम जिन्हें देख सकते हैं, ऐसा प्रखर चमकनेवाला तारा कौन-सा है ?
८. गणित के आधार पर किस ग्रह की खोज की गयी ?

(उत्तर पृष्ठ ८ पर)
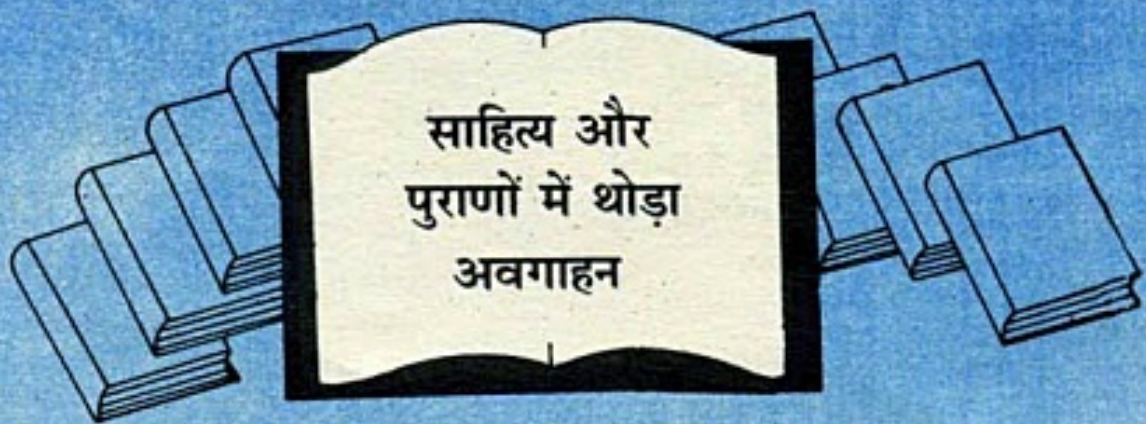
१. बहुतेरे जीवन जीने के कारण सैंकड़ों कहानियों में जिनका ज़िक्र होता है वे व्यक्ति कौन ?
२. इन कहानियों के संग्रह का नाम क्या है ?
३. परशुराम की प्रेरणा से भारत का एक राज्य समुद्र से बाहर निकला माना जाता है । वह राज्य कौन-सा है ?
४. अर्जुन के शंख का नाम क्या है ?
५. गायों की माँ कौन है ?
६. भारत के किस मंदिर में देवी नववधु के रूप में दर्शित है, और अब तक उसका विवाह होने का है ?
७. उस देवी ने कौन-से राक्षस का संहार किया ?
८. रावण का वध करने के लिए राम ने जिस धनुष्य का उपयोग किया उसका नाम क्या है ?
९. राम को किसने यह धनुष्य दिया ?
१०. रावण ने जिस तलवार का उपयोग किया उसका नाम क्या है ?
११. वह तलवार रावण को किसने दी ?

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीखें ।

पर्वत

आसामी : पर्वत; **बंगला** : पर्वत; **इंग्रजी** : माउंटन; **गुजराती** : पर्वत; **हिन्दी** : पहाड़; **कन्नड** : पर्वत; **काश्मीरी** : कोह, पहाड़; **मलयालम्** : पर्वतम्; **मराठी** : पर्वत; **ओरिया** : पर्वत; **पंजाबी** : पहाड़; **संस्कृत** : पर्वत; **सिंधी** : जबलु; **तमिल** : मलै; **तेलुगु** : पर्वतमु; **उर्दू** : पहाड़, कोह

आपको विश्वास है ?

* प्लास्टिक शल्य-चिकित्सा आधुनिक विज्ञान है ?
* पक्षी अपने पंखों को हिलाकर हवा में रहते हैं ?
* बिजली एक स्थान पर दो बार कभी नहीं गिरती ?

नहीं नहीं !

* ईसा पूर्व सातवीं - आठवीं शताब्दी में भारतीय शल्य-चिकित्सक सुश्रुत ने इन्हीं तत्वों का शल्य-चिकित्सा में प्रयोग किया ।
* पक्षी अपने पंखों को हिलाये बिना घंटों हवा में रह सकते हैं ।
* किसी स्थान या स्मारक पर बिजली एक से अधिक बार गिर सकती है ।

उत्तरावलि

वह कौन ?

चाणक्य या कौटिल्य ।
वह युवक था चन्द्रगुप्त मौर्य ।

इतिहास

१. बारह सौ रुपये ।
२. सवर्ण राय चौधरी ।
३. जॉब चारनॉक ।
४. काली घाट, गोविन्दपुर और सुतनाटी ।
५. मुंबई ।
६. पोर्तुगीज़ ।
७. सेनानी अल्बुकर्क ने १५३४ में ।
८. गुजरात के सुलतान बहादुर शाह के साथ संधि करके ।
९. मद्रासपटम् ।
१०. इन्द्रप्रस्थ ।

सामान्य ज्ञान

१. पृथ्वी के साथ नौ ।
२. जुपीटर, जिसका विषुववृत्तीय व्यास ८८,८४६ मील है ।
३. प्लूटो, जिसका व्यास १,८६० मील है ।
४. मंगल ।
५. तीसरा ।
६. सूर्यमाला में अनगिनत छोटी वस्तुएँ तैर रही हैं , विशेष रूप में मंगल और ज्युपिटर की कक्षाओं के बीच में ।
७. सीरिअस ए । जनभाषा में इसे व्याध कहते हैं ।
८. नेपच्यून ग्रह ।

साहित्य और पुराण

१. बुद्ध ।
२. जातक-कथा ।
३. केरल ।
४. देवदत्त ।
५. कामधेनु, जिसको सुरभि या नन्दिनी भी कहते हैं ।
६. कन्याकुमारी ।
७. बाणासुर ।
८. इन्द्र धनु ।
९. अगस्त्य मुनि ।
१०. चन्द्रहास ।
११. भगवान शिव ।

नेहरू की कहानी - 3

जवाहरलाल नेहरू उच्च शिक्षा प्राप्त करने हॅरो से केम्ब्रिज पहुँचे । वहाँ उन्होंने विज्ञान शास्त्र सीख लिया । मगर उन्हें सब से ज़्यादा अभिरुचि इतिहास, राजनीति व अर्थशास्त्र के प्रति रही ।

भारत से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों को वे बड़ी लगन से पढ़ा करते थे । उग्रवादी बाल गंगाधर तिलक और श्री अरविन्द के स्वदेशी आदर्श भावों ने उनको विशेष रूप से आकृष्ट किया । मगर उन के पिता तो नरम दल के नेताओं में से एक थे ।

उन दिनों केम्ब्रिज में निवास करनेवाले भारतीयों ने मजलिस नामक एक संस्था की स्थापना की । वे उन दिनों की राजनीति की अक्सर चर्चा करते थे ।जवाहरलालजी उन सभाओं में सम्मिलित होकर उनके भाषण बड़ी श्रद्धापूर्वक सुनते थे; पर संकोचवश उन्होंने उन सभाओं में कभी खुद व्याख्यान नहीं दिया ।

१९०९ की ग्रीष्म ऋतु में जवाहरलाल ने अपने पिता के साथ यूरप के देशों का भ्रमण किया । उन्होंने बर्लिन में पहली बार ही हवाई जहाज़ को देखा । उस वायुयान में काउंट जेप्लिन आये थे । जर्मन के राजा कैसर ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया !

१९१० में जवाहरलालजी केम्ब्रिज के स्नातक बन गये । इसके बाद उन्होंने नार्वे का भ्रमण किया । वहाँ एक दिन अपने युरोपीय मित्र के साथ वे नदी में स्नान करने गये । बर्फ जैसे ठण्डे जल के स्पर्श से ही उनके हाथपाँव सुन्न रह गये ! उस वक्त बहते प्रवाह में बह जानेवाले जवाहरलाल की उस मित्र ने रक्षा की ।

इसके बाद उन्होंने लन्दन में न्यायशास्त्र (कानून) की शिक्षा प्राप्त की । १९१२ में न्यायशास्त्र के स्नातक बनकर वे भारत लौट आये । मोतीलालजी को यह सोचकर अत्यंत संतोष हुआ कि उनके प्रज्ञाशील पुत्र वकालत के पेशे में योग्य वारिस सिद्ध होंगे ।

स्वदेश लौटते ही जवाहरलालजी राजनीति में अभिरुचि दिखाने लगे । १९१२ में बाँकीपुर में आयोजित कांग्रेस महासभा में उन्होंने भाग लिया । उस सभा में केवल गोपालकृष्ण गोखले ही उनको आकर्षित कर सके ।

इसके बाद जवाहरलालजी ने उच्च न्यायालय में अपनी वकालत शुरू की । पर उस पेशे में उन्होंने अधिक दिलचस्पी नहीं दिखायी । वे अक्सर शिकार खेलने जाया करते थे । लेकिन वे जानवरों का वध करने की इच्छा नहीं रखते थे । एक दिन एक घायल हिरन-शावक ने उनकी गोली से नीचे गिरकर अपनी बड़ी बड़ी आँखों से दीनतापूर्वक उनकी ओर देखा । इससे उनके दिल पर ऐसी चोट हुई कि उन्होंने शिकार खेलना ही बन्द किया ।

१९१६ में लखनऊ में संपन्न कांग्रेस महासभाओं में जवाहरलाल न गान्धीजी को पहली बार देखा । दक्षिण आफ्रिका में ब्रिटिशों के द्वारा भारतीयों पर ढाए अपमानजनक व्यवहार का सामना करनेवाले साहसी गाँधीजी को देख जवाहरलालजी बहुत ही प्रसन्न हुए ।

जवाहरलालजी को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला और एक प्रमुख व्यक्तित्व था - इलाहाबाद में अनेक व्याख्यान देनेवाली श्रीमती सरोजिनी नायडु । इसके बाद शीघ्र ही जवाहरलालजी एक सुदृढ राष्ट्रवादी के रूप में विख्यात हुए ।

१९१६ में वसन्तपंचमी के दिन दिल्ली में जवाहरलालजी का विवाह कमलाजी के साथ परंपरा के अनुसार वैभवपूर्वक संपन्न हुआ । जवाहरलालजी के पुरखों की जन्मभूमि कश्मीर में नये दम्पति ने कुछ दिन आनन्दपूर्वक बिताये ।

एक बार जवाहरलालजी अपने एक रिश्तेदार के साथ लद्दाख के प्रान्त में गये । समीप ही अमरनाथ के होने की कल्पना करके वे दोनों एक पहाड़ पर पहुँचे । अचानक पैर फिसलकर जवाहरलाल एक बर्फीली दरार में धँस गये । उनके रिश्तेदार ने तत्काल एक मोटासा रस्सा उनकी ओर फेंका और उसे पकड़कर वे ख़तरे से बचकर ऊपर निकल आये ।

अयाचित धन

पूर्णचन्द के एक दूर के रिश्तेदार ने मरते समय अपनी जायदाद में से पच्चीस हजार का हिस्सा उसके नाम लिख रखा । अपना हिस्सा प्राप्त करने के लिये पूर्णचन्द उस पड़ोस गाँव में चला गया । वहाँ बहुत से लोगों ने उसकी क़िस्मत की तारीफ़ की । अपनी प्रशंसा सुनकर वह कुछ अचंभित और सतर्क हो गया ।

पूर्णचन्द जब अपने गाँव लौटने लगा, तब नारायण नामक एक व्यक्ति ने उससे कहा, "देखिये महाशय, आप के गाँव के फूलचन्द की कन्या मेरे पुत्र को पसन्द आ गयी है । आप अब अपने गाँव जा ही रहे हैं तो कृपया मेरी ओर से उसे कहियेगा कि, अगले मास में कोई मुहूर्त निश्चित कर हमें उसकी ख़बर भेज दें । "

उसे वचन देकर अपने पच्चीस हजार के साथ पूर्णचन्द अपने गाँव लौट आया । पहुँचते ही अपने धन को उसने गुप्त रूप से एक स्थान पर गाड़ दिया ।

इसके बाद वह फूलचन्द के घर जाकर बोला, "भाईसाहब, मुझ जैसा अभागा इस दुनिया में और कोई न होगा । मेहनत करके अपने दिन जैसेतैसे काटनेवाले मेरे जैसे व्यक्ति को अयाचित रूप में पच्चीस हज़ार रुपये प्राप्त हुए । मैं ने सोचा कि उन पैसों से एकाध खेत खरीद कर आराम से अपनी ज़िन्दगी बसर कर दूँ । लेकिन रास्ते में ही डाकुओं ने मेरा धन लूट लिया । उसीके साथ मेरी अपनी मेहनत के सौ रुपये थे, वे भी लुट गये । समझ में नहीं आता कि अब मैं अपना गुज़र बसर कैसे करूँ । " यह कहते हुए वह अपना सिर पीटने लगा ।

पूर्णचन्द के प्रति हमदर्दी दिखाते हुए फूलचन्द ने कहा, "देखो भाई, आजतक तो हम दोनों के बीच कोई दोस्ती नहीं हुई है और

न हम एक-दूसरे के रिश्तेदार भी हैं । तुम्हारा धन खो गया सही, मगर तुम अपना दुखड़ा मेरे सामने क्यों रो रहे हो ? ''

इसपर पूर्णचन्द हँसकर बोला, ''उफ़ ! मैं भी कैसा आदमी हूँ ! अपने धन खोने की चिन्ता में आप को खुश खबरी सुनाना भूल ही गया । आप की बेटी की शादी तय हो चुकी है । लड़केवालों ने आप को मुहूर्त निश्चित करने को कहा है । '' इन शब्दों के साथ उसने नारायण द्वारा दिया गया संदेश उसे सुनाया ।

इस पर फूलचन्द खुश होकर बोला, - ''तुम तो बड़ी अच्छी ख़बर लाये हो ! बताओ, मैं तुम्हारी किस प्रकार मदद करूँ ? ''

''मुझे बस एक सौ रुपये कर्ज़ दे दीजिये । एक साल के अन्दर ही मैं आपकी रक़म चुका दूँगा । '' पूर्णचन्द ने जवाब दिया ।

''सौ रुपये चुकाने के लिये तुम्हें एक साल की मियाद चाहिये ? '' फूलचन्द ने आश्चर्य व शंका भरे लहज़े में पूछा ।

''सुनिये फूलचन्दजी, पचीस हज़ार रुपये अयाचित प्राप्त होने की ख़बर सुनते ही मेरे मन में उस रकम के विनियोग की अनेक कल्पनाएँ उदित हुई । मैंने सोचा, बहुत सारी ज़मीन खरीद कर खुद ख़ेती करूँगा । उस रकम को खोने के बाद भी खुद खेतीबाड़ी करने की लगन दृढ हो गयी है । जैसे मैं ने आपसे एक सौ माँगे हैं, वैसे ही और चार लोगों से सौ सौ माँग लूँगा और चार एकड़ ज़मीन खरीदूँगा । '' पूर्णचन्द ने अपनी योजना बतायी ।

''मान लो, खेती में किसी कारण इस साल फसल न हुई, तो क्या करोगे ? '' फूलचन्द ने पूछा ।

''मेरा अपना मकान दो हज़ार रुपये मूल्य का है । उसे बेचकर सारा कर्ज़ा मैं चुकाऊँगा । '' पूर्णचन्द ने उसे आश्वस्त किया ।

मकान की बात सुनकर फूलचन्द ने ही नहीं, और कई लोगों ने भी हिम्मत कर के पूर्णचन्द को कर्ज़ दिया । कुछ लोगों ने पूर्णचन्द पर रहम खाकर, कि उसने पच्चीस हज़ार खो दिये, उसकी मदद भी की ।

इस प्रकार बहुत, से लोगों से पैसे लेकर पूर्णचन्द ने चार एकड़ ज़मीन ली और पूरी

लगन के साथ मेहनत करने लगा । उसकी कड़ी मेहनत देखकर ग्रामवासी कहने लगे, "दृढ लगन की बात सीखनी है, तो पूर्णचन्द से ही सीखनी चाहिये ।"

उस वर्ष सर्वत्र अच्छी पैदावार हुई । पूर्णचन्द की फ़सल तो सब से ज़्यादा हुई । उसी वर्ष उसने अपने कर्ज़ का तीन-चौथाई हिस्सा चुका दिया । वह ईमानदार था, और अब उसके पास गिरवी रखने के लिये मकान और खेत भी थे । इसलिये बाकी लोगों ने अपना ऋण चुकाने के लिये उस पर दबाव नहीं डाला ।

दूसरे वर्ष सारे पुराने कर्ज़ चुकाने के साथ और एक एकड़ और ज़मीन भी खरीद ली । उसकी ईमानदारी व मेहनत पर खुश होकर गाँव के एक किसान ने अपनी बेटी भी उससे ब्याह दी । पूर्णचन्द की पत्नी का नाम गौरी था ।

विवाह के बाद एक दिन गौरी ने पूर्णचन्द से कहा, "मैं वैसे पहले से ही तुम को चाहती थी । लेकिन मेरे पिताजी इसलिये तुम्हारे साथ मेरा विवाह करा देने से इनकार कर रहे थे कि, तुम्हारे अपने नाम कोई ज़मीन-जायदाद थी नहीं । मगर जब तुम्हें पच्चीस हज़ार रुपये प्राप्त होने की बात उन्होंने सुनी तब वे तैयार हो गये । और फिर जब उन्हें पता चला कि तुमने वह संपत्ति खो दी है, तब फिर उन्होंने अपना इरादा इस कारण बदल दिया, कि तुम बहुत लापरवाह हो । इसके बाद कड़ी मेहनत करके तुम ने जायदाद बनायी और हमारी शादी हो गयी । फिर भी मेरे मन में एक शंका है ।" इतना कहकर वह चुप हो गयी ।

"बताओ तो, क्या शंका है तुम्हारी ?" पूर्णचन्द ने पूछा ।

"पहले से ही तुम्हारे पास अपना घर था ही । बहुत समय से तुम दूसरों के खेतों में काम करते रहे । फिर पहले ही उधार लेकर खेत क्यों नहीं खरीदा । क्या तुमने धन खो दिया इसलिये तुम में लगन पैदा हुई ?" गौरी ने अपनी शंका प्रकट की ।

पूर्णचन्द हँसकर बोला, "वास्तव में असली बात कोई नहीं जानता । तुम मेरी पत्नी हो, इसलिये अब सच्ची बात तुम्हें बता रहा हूँ । पड़ोस गाँव में प्राप्त धन के साथ ही फूलचन्द की बेटी के विवाह की खुश खबरी मुझे लानी पड़ी । मेरा अनुमान था कि बेटी के विवाह में

फूलचन्द को कम से कम दस हज़ार रुपये ज़रूर खर्च करने पड़ते । मुझे अयाचित धन प्राप्त होने की बात गाँव भर में मालूम थी । ऐसी स्थिति में फूलचन्द ज़रूर मुझ से पैसा उधार माँगता । उन के साथ मेरा घनिष्ट परिचय तो था नहीं और मैं अपने पास धन न होने की बात तो नहीं कर सकता था । और फिर मुझे प्राप्त धन मेरी अपनी मेहनत की कमाई का तो नहीं था । ऐसा धन लोगों के मन में हलका भाव रखता है । फूलचन्द ही नहीं, गाँव का और भी कोई आदमी मुझ से कर्ज माँगता, तो मैं इन्कार नहीं कर सकता था और ऐसा करने से गाँव वाले नाराज़ हो सकते थे । अयाचित प्राप्त धन को शीघ्र लौटाने की भी बात कोई नहीं सोचता । इसलिये मैं ने झूठ ही कहा कि मेरा धन लुट गया । ''

इसपर गौरी ने और पूछा, "तुम तो बड़ी दूर की सोचनेवाले निकले ! लेकिन क्या तुमने जो कड़ी मेहनत की, उसी कमाई से सारा कर्ज़ चुकाया कि अपना गुप्त धन निकालकर उस से चुकाया ? ''

"मैं ने सारा कर्ज़ मेहनत के पैसों से चुकाया है । मुझे अपनी मेहनत पर पूरा विश्वास है । मगर इस के पूर्व उधार लेने से मैं डरता था । दुर्भाग्य से अगर फसल न होती, तो मेरा एक मात्र आधार मेरा घर मुझे बेचना पड़ता । पच्चीस हज़ार पास होने पर मुझ में हिम्मत आयी । उसी हिम्मत से मैं ने मेहनत से काम किया और वह अयाचित धन भी सुरक्षित रहा । साथ ही गाँव में मेरी प्रतिष्ठा भी बढ़ गयी । मुझे अपनी शक्ति व युक्ति पर विश्वास पैदा हुआ और तुम जैसी उत्तम सुगृहिणी भी मैं प्राप्त कर सका । है न ठीक ? '' पूर्णचन्द प्रसन्नता से खिल उठा ।

"तुम्हारे भीतर भविष्य-दृष्टि है, आलसीपन नहीं है । अयाचित धन का तुम ने जैसा उपयोग किया, शायद ही और कोई कर सकता था । ''गौरी ने कहा ।

इस के बाद पूर्णचन्द को हर काम में सफलता प्राप्त होती रही । फिर भी स्वयं मेहनत करने में उसने कोई कसर नहीं रखी । उसने आदर्श जीवन बिताया ।

दक्षिण देशों के अपने मित्रों के उकसाने पर रुक्मि का अहंकार जागृत हो उठा । सुचारु रूप से अलंकारित एक सभा-भवन में सुवर्ण-पट, मोहरें, पाँसे आदि सामग्री से जुआ खेलने की सारी तैयारियाँ हो गईं । बलराम के पास समाचार भेजा गया – "थोड़ी देर जुआ खेलने का शौक हो रहा है । अवश्य पधारिए । आप भी द्यूत के अच्छे खिलाड़ी है । बहुत दिन हुए आप को खेलने का अवसर नहीं मिला है । आइए, आज थोड़ा खेलकर मन बहलाएँगे । देखेंगे कौन अच्छा खिलाड़ी है । " बलराम वैसे भी द्यूत के बड़े प्रेमी थे, इसलिए उत्साह में आकर सभा-भवन में जुआ खेलने पहुँच गये ।

दक्षिण देश के राजाओं ने सुझाया बलराम के साथ रुक्मि ही सब से योग्य खिलाड़ी है । मोती, रत्न और सुवर्ण के ढेर दाँव पर लगाये गये । खेल शुरू हुआ । दस हज़ार सुवर्ण-मुद्राएँ दाँव पर रख कर बलराम हार गये । दूसरी बार उतनी ही मुद्राएँ दाँव पर लगाकर हार गये । यों बलराम बार-बार खेल में हारते ही रहे । बलराम मन-ही-मन सोचने लगे, जाने क्यों आज हार पर हार हो रही है । क्या हो गया है मेरी द्यूत की कुशलता को । अब तक तो हारता ही आया, अब जीत कर दिखा दूँगा ।

अंत में बलराम एक करोड़ स्वर्ण-मुद्राएँ दाँव पर लगाकर जीत गये । लेकिन रुक्मि ने गरजकर कहा – "इस बार भी जीत मेरी ही है । बलराम पाँसे खेलना जानता ही नहीं । मैंने एक करोड़ स्वर्ण-मुद्राएँ जीत ली हैं । "

रुक्मि के मित्र कलिंग राजा ने परिहास करते

१९. नरकासुर का हौसला

हुए हँस कर कहा - "हाँ हाँ, रुक्मि का कहना सच है ।" इस असत्य कथन पर बलराम का क्रोध उबल पड़ा, पर अपने को काबू में रखते हुए वहाँ पर उपस्थित लोगों से उसने पूछा - "आप ही लोग बताइए । आपने देखा मैंने दाँव जीत लिया है, और अब यह अपने को विजयी बता रहा हैं । यह कैसा न्याय है ?"

सब ने अपने सिर झुका लिये । किसी ने भी बलराम के पक्ष में कुछ नहीं कहा ।

रुक्मि ने बलराम से फिर कहा - "मेरी विजय पर कोई क्या संदेह करेगा ? मोह में पड़कर आप क्यों यों झूठ बोल रहे हैं ?"

बलराम समझ न पाया कि ऐसे सफेद झूठ का क्या जवाब दिया जाए । इतने में आकाशवाणी हुई - "बलराम का कहना सत्य है । रुक्मि झूठ बोल रहा है । तुम सब लोग बुद्धू की तरह मौन धारण किये क्यों यों चुपचाप बैठ रहे हो ? सत्य का पक्ष लेने में तुम को डर लग रहा है ? ऐसे झूठ का साथ देते रहेंगे तो उसका परिणाम कभी न कभी भुगतना पड़ेगा । जीत हमेशा सत्य की ही होती है इसे भूलना नहीं ।"

तब भी किसीने मुँह नहीं खोला । बलराम अब आपे से बाहर हो गये । वे तैश में आ गये और रुक्मि पर मुक्के का ज़ोरदार प्रहार करने लगे । फिर जुए का फलक लेकर कलिंग के राजा के सिर पर दे मारा, जिससे उसका सिर फूट गया । अन्य उपस्थित राजा उन पर टूट पड़े । तब बलराम ने अपनी तलवार खींच ली और उन सब के सिर काट दिये । बाक़ी लोग भय के मारे भाग गये ।

इस बीभत्स कांड के बाद बलराम अपने निवास-स्थान पर गये और श्रीकृष्ण को सारा समाचार कह सुनाया । श्रीकृष्ण ने न उस पर कोई आक्षेप किया, न ही उसकी प्रशंसा की । बलराम को श्रीकृष्ण के इस व्यवहार के बारे में आश्चर्य लगा । जो कुछ हुआ उसके बारे में वे यों मौन क्यों ? अगर कुछ ग़लती हुई तो समझाना चाहिए । अगर अच्छा काम किया तो तारीफ़ करनी चाहिए । खैर ..... । पर अन्य प्रमुख यादवों ने बलराम की प्रशंसा कर उन्हें संतुष्ट किया ।

इसके उपरान्त वे सब वधू-वरों को साथ लिये द्वारका लौट आये ।

बलराम असामान्य बल और पराक्रम, तथा

शक्ति और सामर्थ्य रखनेवाले हैं । दस हज़ार हाथियों की ताकत रखनेवाले प्रसिद्ध भीमसेन ने बलराम के पास ही शास्त्र-विद्या सीख ली है । सब लोग सोचते हैं कि यदि इन दोनों के बीच में लड़ाई हो जाए तो विजय भीम की ही होगी ।

एक बार कृष्ण के पुत्र सांबु ने दुर्योधन की पुत्री लक्षणा से प्रेम किया और उसे लेकर भाग निकले । इस पर कौरवों ने उसका पीछा किया और उसको बंदी बनाकर हस्तिनापुर के कारागृह में रखा । यह खबर पाते ही बलराम क्रोध में आ गये । वे हस्तिनापुर पहुँचे और सांबु को कारागार से छोड़ देने का अनुरोध किया । पर कौरवों ने बलराम की बात नहीं मानी । उनका कहना था कि सांबु को अगर लक्षणा से विवाह करना था तो दुर्योधन के पास जाकर बातचीत करते । किसी को यों भगा ले जाता अनुचित है । उसको जो दंड दिया है, वह उचित ही है । उसे कारगृह से मुक्त नहीं किया जा सकता । बलराम का यह प्रस्ताव भी कितनी मूर्खता का है ? हम उसे कभी स्वीकार नहीं कर सकते ।

इस पर बलराम ने प्रतिज्ञा की कि वे हस्तिनापुर के लोगों को उनके घरों के साथ गंगा में ढकेल देंगे । फिर दुर्ग के नीचे अपना हल घुसेड़ कर उसे उठाने को तैयार हुए ।

बलराम का साहस कार्य देख दुर्योधन और उसके साथी घबरा गये और सांबु को लाकर बलराम के सामने पेश किया । बलराम प्रसन्न हुए । इसी समय दुर्योधन ने बलराम का शिष्य बनने का अपना निर्णय घोषित किया और उनकी गुरु-पूजा की । दुर्योधन ने गुरु को उच्चासन पर बिठाया । रंगबिरंगे फूलों की माला उनके गले में पहनायी । उनको सुस्वादु भोजन दिया । और अनेक कीमती वस्तुओं को गुरु-दक्षिणा के रूप में उन्हें समर्पित किया । बलराम के इस कृत्य के कारण हस्तिनापुर शाश्वत रूप में एक तरफ उठा रह गया और दूसरी तरफ ढलानवाला ! बलराम का शिष्य बनकर दुर्योधन ने गदा-युद्ध में अपार सुयश संपादन किया ।

इसी समय राक्षसों की दुनिया में नरकासुर बहुत ही बलिष्ठ बन बैठा । वह भूदेवी का पुत्र था और उसकी राजधानी थी प्राग्ज्योतिषपुर । ब्रह्मा से उसने अनेक वर प्राप्त कर किये थे । वह किसी भी देवता के हाथ हारता न था ।

उसके बल-पराक्रम के कारण सारे लोग थरथराते थे । वह यह भूल गया था कि ब्रह्म ने वर इसलिए दिये थे कि उनका उपयोग धर्म और सत्कर्म के लिए किया जाय । पाप और अधर्माचरण के लिए उनका उपयोग करें तो वह सर्वनाश का कारण होगा । चूँकि नरकासुर इस बात को समझा नहीं, अपनी दुर्बुद्धि के कारण पापाचरण ही करता रहा ।

नरकासुर ने सब से पहले इन्द्रपुरी पर आक्रमण किया । नगर के सभी द्वारों को उसने अपनी मुट्ठी के प्रहारों से तोड़ दिया, और तब अपने सिंह-नाद से इन्द्र को युद्ध के लिए ललकारा । इन्द्र ऐरावत पर सवार हो अपने हाथ में वज्र लिये युद्ध के लिए आ पहुँचा । नरक ज़रा भी नहीं डगमगाया और इन्द्र के साथ लड़ पड़ा । इन्द्र की सहायता करने यम, वरुण, कुबेर आदि अपनी सेनाओं के साथ आये । सब ने एक साथ युद्ध में भाग लिया । दोनों तरफ की सेनाओं ने एक दूसरों पर तरह तरह के अस्त्र फेंके । पास में आने पर शस्त्रों का भी उपयोग किया गया । घंटों तक युद्ध चलता रहा । किसी की जीत नहीं हो रही थी । कई सैनिक मारे गये, बहुत अधिक ज़ख्मी हुए । नरकासुर अपनी सभी युद्ध-कुशलता का प्रदर्शन कर रहा था । फिर भी इन्द्र पर विजय पाना कुछ समय तक उसे कठिन मालूम हुआ ।

नरकासुर की मदद के लिए भी हयग्रीव, निशुंभ तथा मुरासुर तीन राक्षस-नेता आ गये । हयग्रीव के साथ वरुण ने युद्ध किया, तब वरुण का सिर फूट गया । खून उगलने से वे बेहोश हो गये, फिर होश में आते ही युद्ध-भूमि से भाग गये । वरुण के साथ उसकी सेना भी भाग खड़ी हो गई । इसी प्रकार निशुंभ के हाथों यम ने और मुरासुर के हाथों कुबेर ने मार खाया और वे अपनी सेना के साथ भाग खड़े हुए । अंत में नरकासुर के प्रहारों से स्वयं इन्द्र भी घबराकर भाग गये । इस तरह विजय प्राप्त करने पर नरकासुर ने देव-लोक में प्रवेश किया और सर्वत्र अपनी विजय का डंका बजाया ।

अब नरकासुर इन्द्र के आसन पर विराजमान हो गया । ऊर्वशी को बुलाकर उसने आदेश दिया – "सुनो, मैंने समस्त दिक्पालों पर विजय पायी है । इस समय सारी देवताओं का राजा

वस्तुओं को लूट कर ले आते और उन्हें नरकासुर को सौंपते । वे जहाँ जाते वहाँ लोगों को सताते और वहाँ की अप्सराओं को भगा कर ले आते । वे राक्षस सोलह हज़ार एक गंधर्व-कन्याओं को, लाखों यक्ष-नारियों को तथा अनगिनत किन्नर, सिद्ध, साध्य तथा विद्याधर स्त्रियों को बन्दी बनाकर ले आये ।

प्रागज्योतिषपुर की चारों दिशाओं में चार महान् योद्धा - मुरासुर, हयग्रीव, निशुंभ तथा पंचजन नगरी की रक्षा कर रहे थे । मुरासुर के हज़ारों पुत्र थे । उनके कारण उस नगर में प्रवेश करना किसी के लिए संभव न था ।

अब नरकासुर के मन में इच्छा पैदा हुई कि सारे भूलोक पर अधिकार जमाया जाए । सर्वत्र घूम कर वह यज्ञों का ध्वंस करने लगा । उसने मुनियों को सताना शुरू किया, बालकों का संहार किया । भूलोक के सारे राजा त्रस्त हो गये । धर्म का विनाश करना उसने अपना लक्ष्य बनाया ।

नरकासुर एक बार बदरीवन में पहुँचा । उस समय वहाँ अनेक ऋषि अपने यज्ञ-कर्म में निमग्न थे । तब नरकासुर को ऊर्वशी की कही बात याद आ गयी । उसने ऋषियों से पूछा - "तुम लोग किस की स्मृति में यज्ञ करते हो ? "

"वेदों के वचनानुसार हम इन्द्र के प्रति यज्ञ करते हैं । " ऋषियों ने उत्तर दिया ।

इस पर नरकासुर ने क्रोधित होकर कहा - "मैंने तुम्हारे इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर आदि को युद्ध में हरा दिया है । उनके सभी राज्य मैंने

मैं ही हूँ । आज से तुम अपने नृत्य और गीतों द्वारा मेरा मनोरंजन करो । "

"ओह, यह बात है ! जब समस्त मुनि अपने यज्ञों में आपकी पूजा करें तो मैं अवश्य आप के आदेश का पालन करूँगी । " ऊर्वशी ने कहा ।

नरक ने ऊर्वशी की शर्त मान ली । इसके बाद नरकासुर ने अमरावती को लूटा, सुमेरु पर्वत से रत्नों की राशियों को खुदवाया । उसने आठ हज़ार देव कन्याओं को बन्दी बनाया और विश्वकर्म की पुत्री को अपने अधिकार में ले लिया । अदिति के कुण्डलों का अपहरण करके वह अपने नगर लौट आया ।

नरकासुर का आदेश पाकर उसके सेवक-राक्षस चौदहों लोकों की अनमोल

जीत लिये हैं । अब समस्त विश्व का अधिपति मैं ही हूँ । इस लिए तुम लोग मेरी स्मृति में यज्ञ करो । मुझे प्रणाम करो । अगर तुम लोग मुझे संतुष्ट करोगे तो मैं तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूर्ण करूँगा । "

ऋषियों ने स्पष्ट कह दिया - "यह तो सर्वथा अनुचित है । लोकों का शासक तो इन्द्र ही है । तुम दुष्ट राक्षस हो । हम तुम्हारी पूजा कैसे कर सकते हैं ? "

ऋषियों का उत्तर सुनकर नरकासुर आग-बबूला हो गया । उसने अपने सेवकों को आदेश दिया - "ये मुनि बहुत उन्मत्त हो बकवास कर रहे हैं । इनके यज्ञ का ध्वंस कर दो । " सेवकों ने तुरन्त नरक की आज्ञा का पालन किया । राक्षसों ने अग्निकुंड भर दिये, पशुओं की हत्या की, यज्ञ के होता, उद्घाता तथा अन्य सदस्यों को मारा-पीटा, यज्ञ-सामग्री को फेंक दिया, अरणों का जलाया, हविस खा डाले, अन्न के ढेरों को छितराया, सोमरस को राख में डाल दिया, तरह तरह के बीभत्स काम किये । इस कांड के बाद नरकासुर लौट गया ।

इसके बाद वसिष्ठ, वामदेव, जाबाली, धूम्य, भरद्वाज, मंकण आदि महाऋषियों ने एक साथ बैठकर विचार-विमर्श किया कि ऐसे दुष्टों से यज्ञ की रक्षा कैसे करें ? दुष्ट नरकासुर से हमारी सुरक्षा करनेवाला कोई न हो तो हमारा जीवित रहना मुश्किल हो जायगा । अंत में सब ने निश्चय किया कि अवतार-पुरुष श्रीकृष्ण ही उनका उद्धार कर सकते हैं । अतः सब लोग द्वारका के लिए निकल पड़े ।

वे लोग दक्षिणाभिमुखी होकर यात्रा करते

हुए रास्ते में पड़नेवाले तीर्थों मे स्नान करते हुए भागीरथी तक पहुँचे । उसमें नहाकर प्रायश्चित कर लिया । फिर स्वर्ग से भी बढ़िया वैभवसंपन्न नगरी द्वारका पहुँचे ।

नगर के राज-पथ से गुज़रने हुए नगरी के ऐश्वर्य को देखकर विस्मित हुए । फिर श्रीकृष्ण के पास संदेश भेजा कि बदरीवन से कुछ महर्षि-गण पधारे हैं ।

ऋषियों के आगमन का समाचार सुन कर श्रीकृष्ण ने प्रद्युम्न को बुलाया और ऋषियों को आदरपूर्वक बुला लानेका आदेश दिया । प्रद्युम्न ने महल के बाहर आकर ऋषियों का समुचित स्वागत किया और वह उनको श्रीकृष्ण के सभा-भवन में ले गया ।

सभा-भवन में श्रीकृष्ण एक उच्च आसन पर विराजमान थे । मुनि लोग मन में यह विचार करते हुए श्रीकृष्ण के पास पहुँचे - "हमारी सारी कामनाओं की पूर्ति कर सकनेवाले श्रीकृष्ण के रहते हुए आज तक हम लोग इस दुष्ट राक्षस के हाथों क्यों अपमानित होते रहे । शायद इसी को प्रारब्ध कहते हैं । विलम्ब से ही सही, हमने अब श्रीकृष्ण के दर्शन कर लिये । इस दुष्ट राक्षस ने अरण्यों में तपस्या करनेवाले हमें परेशान किया, इसी से हमें यह अनोखा लाभ प्राप्त हुआ । "

ऋषियों को देखते ही श्रीकृष्ण तुरन्त अपने आसन से उठकर आये, अर्घ्य, पाद्य तथा मधुपर्क के द्वारा उनका सत्कार किया । फिर उनकी अनुमति पाकर वे पुनः अपने आसन पर बैठ गये । फिर अन्य प्रमुख यादवों ने मुनियों को प्रणाम किया और अपने अपने आसनों पर बैठ गये ।

अब श्रीकृष्ण ने हाथ जोड़कर मुनियों से पूछा - "आप लोगों के यज्ञ तो निर्विघ्न संपन्न हो रहे हैं न ? आप के व्रत और तप यथा-प्रकार चल ही रहे होंगे ? आप सब लोग एक साथ यहाँ चले आये इसका क्या कारण है ? मुझ पर अनुग्रह करके मुझे कृतार्थ करने की इच्छा से ही आप सब इस प्रकार पधारे होंगे । आप लोग अगर कोई कार्य मुझे सौंपे तो उसे संपन्न करने के लिए हम एक दम तैयार बैठे हैं । "

(क्रमशः)

एक गड्ढा - एक भगवान

गरमी के मौसम में एक यात्री शिवपुरी गाँव से होकर गुज़र रहा था । उसे बड़ी प्यास लगी थी, इसलिये वह एक मकान के सामने जा खड़ा हुआ और उसने पानी के लिये पुकारा ।

मकान का मालिक उस वक्त किवाड़ बन्द करके अन्दर पूजा कर रहा था । उसने बाहर से पुकार सुनकर कहा, "ज़रा रुक जाइये । मैं पूजा में लगा हुआ हूँ । चबूतरे पर बैठ जाइये । पूजा समाप्त होते ही पानी दूँगा । "

यात्री चबूतरे पर बैठ गया । थोड़ी देर बाद भीतर से घंटी की आवाज़ सुनायी दी । आरती उतारी गयी । अब पूजा समाप्त हो गयी और उसे तुरन्त पानी मिलेगा यह सोचकर यात्री उत्सुकता से किसी के बाहर आने की राह देखने लगा । इस पर कई मिनट बीत गये, मगर कोई पानी लेकर नहीं आया । यात्री को लगा कि शायद लोग भूल गये, और उसने फिर एक बार पानी के लिये पुकार लगायी ।

"अरे अभी गणेशजी की पूजा समाप्त हुई. अन्य देवताओं की पूजा आरम्भ की है, ज़रा रुक जाइये । आपको प्यास लगी है मैं जानता हूँ । पर पूजा का काम छोड़कर मैं बाहर नहीं आ सकता । घर में पानी देने के लिए दूसरा कोई नहीं है । " भीतर से आवाज़ आयी ।

इसके बाद देर तक कोई बाहर न आया । फिर एक बार घण्टी की आवाज़ आयी । यात्री थोड़ी देर रुका और फिर उसने पुकार लगायी ।

"अभी अभी नवग्रह पूजा समाप्त हो गयी है । अन्य देवताओं की पूजा समाप्त होने पर पानी ला देता हूँ । ज़रा सब्र कीजिये । पूजा का काम अधूरा कैसे छोड़ा जा सकता है ? यही तो मेरे जीवन की साधना है, सब कुछ है । " भीतर से उत्तर मिला ।

फिर एक बार आरती की घंटी सुनने पर यात्री ने पानी माँगा ।

"अभी अभी मैंने बालाजी की पूजा की है ।

अशोक सिन्हा

बाकी देवताओं की पूजा होने तक रुकिये । और मैंने कहा न कि मैं अपने पूजा के काम में रुकावट नहीं चाहता । बार बार पानी के लिए मत पुकारना । पूजा का काम समाप्त होने पर मैं पानी देता हूँ । " भीतर की आवाज़ ने कहा ।

इस प्रकार मकान मालिक से बराबर यही जवाब मिलता रहा कि अमुक देवता की पूजा समाप्त हुई है, और बाकी देवताओं की पूजा समाप्ति पर पानी मिलेगा । इसलिये तब तक सब्र करें ।

यात्री बेसब्री से राह देखता रहा, उसका गला सूखता जा रहा था । उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कि वक्त कैसे काटा जाय । वहाँ एक कुदाल पड़ी हुई थी । जब भी घंटी बजती थी, वह कुदाल से चबूतरे के पास एक एक गड्ढा खोदता गया ।

थोडी देर बाद पूजा समाप्त कर, घर का मालिक पानी लेकर बाहर आया ।

उसने यात्री के द्वारा खोदे गये गड्ढे देखकर अचरज से उसकी ओर देखा । कहा – "यह क्या बेकार काम कर रहे हैं आप ? गड्ढे खोदने से क्या होगा ?"

यात्री ने बिना विचलित हुए कहा, "महाशय, मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था । समय काटने के लिये, जब जब आपने आरती की घंटी बजायी, तब तब मैंने एक एक गड्ढा खोदा । कृपया बुरा न मानिये । "

मकान मालिक इसपर क्रोध से बोला, "तुम्हारा दिमाग तो ख़राब नहीं हुआ ? चबूतरे के पास इतने सारे गड्ढे खोद डाले । अगर तुम्हें कुछ न सूझता था, तो एक ही गड्ढे क्यों नहीं खोदा ? एक छोटा सा कुआँ बन जाता और तुम्हारी प्यास भी बुझ जाती । "

अब यात्री भी तैश में आकर बोला, "आप का कहना सच है । आप भी इतने सारे देवताओं की पूजा करने के बदले एक ही देवता की पूजा करते, तो अब तक आप को उस भगवान का साक्षात्कार हो जाता । " इतना कहकर वह पानी पीकर वहाँ से चलता बना ।

धोखेबाज़ों का गुरु

बहुत दिन हुए, बगदाद नगर में एक धनी व्यापारी रहा करता था । सारी दुनिया की यात्रा उसने की थी, लेकिन पहाड़ों के बीच बसे एक नगर में वह कभी नहीं गया था । उस नगर से आये एक यात्री से मुलाक़ात करने का मौक़ा उसे एक बार मिला ।

व्यापारी ने यात्री से पूछा, "तुम्हारे नगर में किन चीज़ों की माँग ज़्यादा होती है ?" यात्री ने कहा, "वहाँ चन्दन की लकड़ी अच्छे दामों पर बिक सकती है । क्यों कि हर पहाड़ पर चन्दन के पेड़ नहीं होते । जहाँ ये नहीं होते, वहाँ लोगों को चन्दन का बड़ा आकर्षण होता है । चन्दन की सुगंधित लकड़ी को तो भारी दाम पर खरीदते हैं । चन्दन की लकड़ी से बनी चीज़ों को तो चाहे जिस दाम पर बेचा जा सकता है ।"

व्यापारी ने अपना सारा धन लगाकर चन्दन की लकड़ी खरीदी और उसे गाड़ियों पर लदवाकर पहाड़ों के बीच बसे नगर की ओर निकल पड़ा । व्यापारी नगर के पास पहुँच ही रहा था, तब एक बूढ़ी अपनी भेड़ों को हाँकती हुई सामने से आ गुज़री । उसने व्यापारी को देखते ही जान लिया कि यह कोई परदेसी सौदागर है । उसने व्यापारी को सावधान किया, "ख़बरदार बेटा, इस नगर के लोग पक्के बदमाश और चोर हैं । दिन दहाड़े परदेसी आदमी देखकर दग़ा देते हैं । तुम ठहरे परदेसी आदमी । इन लोगों के चंगुल में फँस जाओगे, तो व्यापार क्या करोगे ? दीवाला निकालके खाली हाथ अपने घर जाओगे । कई लोगों के साथ ऐसा हुआ है । इस लिए तुम्हें सावधान किये देती हूँ ।" यों चेतावनी देकर वह अपने रास्ते चली गयी ।

व्यापारी जब नगर के दरवाज़े तक पहुँचा, तब तक चारों ओर अँधेरा छा गया था । और द्वार बन्द हो चुका था । सारी रात उसने नगर

(अरब की लोककथा)

के बाहर ही बितायी । सबेरा होते ही द्वार पार करके वह नगर के अन्दर घुसा ही था, कि एक आदमी ने उसे देख उससे परामर्श करते हुए कई प्रश्न किये ।

व्यापारी ने अपना परिचय दिया, "मैं बगदाद का निवासी हूँ । मेरा नाम हिन्दबाद है । मैंने सुना कि इस नगर में चन्दन की लकड़ी की बड़ी माँग है, इसलिये मैं अपना यह माल बेचने लाया हूँ । ''

"किस मूर्ख ने तुम्हें यह बात कही ? अरे, हम लोग तो चन्दन की लकड़ी को जलावन के काम लाते हैं । जलावन के लिये कोई ज्यादा दाम देगा भला ? तुम भी कैसे किसी के बहकावे में आ गये । यहाँ तो चन्दन के जंगल है जंगल । यहाँ कौन तुम्हारी चन्दन की लकड़ी को खरीदेगा ? '' इतना कहकर वह आदमी वहाँ से चला गया ।

हिन्दबाद निर्णय नहीं कर पाया कि उस आदमी का कहना सच है, या झूठ ? अपने माल के साथ वह एक भटियारिन के घर पहुँचा और वहीं ठहर गया । इसके बाद जब वह उस मकान के बाहर आँगन में पहुँचा तो देखता क्या है - नगर-द्वार पर मिला वह आदमी एक और आदमी के साथ उसी अहाते में चूल्हा जलाकर रसोई बना रहा है । जलावन के रूप में चूल्हे में चन्दन की लकड़ी जल रही थी । यह देख व्यापारी का कलेजा काँप उठा । हाँ, उस व्यक्ति का कहना ज़रूर सच है । जहाँ चन्दन के जंगल है वहाँ मेरी चन्दन की लकड़ी कोई खरीदेगा तो जलावन के दाम में ही । मैंने चन्दन की लकड़ी यहाँ लाने में हिमालय जैसी भूल की है । इस व्यापार में लाभ होगा भी जो बहुत कम ही होगा । अब सारा माल बेचने पर भी केवल थोड़ी सी चाँदी ही हाथ लग सकती है ।

हिन्दबाद जब उन के पास पहुँचा तो उन्होंने पूछा, "क्या अपना माल बेचने को तैयार हो ?"

"मृल्य क्या देंगे ?" व्यापारी ने पूछा ।

"इसी वज़न का आप जो भी माल माँगे, दे देंगे । '' उन्होंने जवाब दिया । उनकी बात मानकर व्यापारी ने चन्दन की लकड़ी उन्हें यह कहकर सौंप दी कि, "कल माल माँग लूँगा । "

इनका यह प्रस्ताव तो बहुत ही अच्छा है । मेरी लकड़ी की वज़न का कोई भी माल ये देने को तैयार हैं । मैं कुछ भारी दाम का

माल माँगूँगा, तो बस, लाभ ही लाभ । अपनी किस्मत खुल गई ऐसा लगता है ।

इसके बाद हिन्दबाद नगर देखने चला गया । रास्ते में एक काने आदमी ने उसके पास आकर अचानक उसका हाथ थाम लिया और वह चिल्ला उठा, "भाइयों ! देखो, इसीने मेरी आँख फोड़ दी थी । बच्चम्‌जी, इस बार तुम बचकर नहीं निकल सकते ।"

यह सुनकर कई लोगों ने उसे घेर लिया । हिन्दबाद अपने को छुड़ाने का प्रयास करते हुए बोला, "मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो । आज तक मैंने तुम्हारा चेहरा तक नहीं देखा है । पहली ही बार मैं इस नगर में आया हूँ । मैंने कब तुम्हारी आँख फोड़ी ? यह तो अंधेर-नगरी लगती है । कोई कुछ भी कहता है । न जान न पहचान और कहता है - मैंने इसकी आँख फोड़ी । यह कहाँ का न्याय ?" मगर वहाँ इकट्ठा लोगों ने काने का समर्थन किया और यह निर्णय किया कि व्यापारी काने को उसका मुआवज़ा दे दें ।

व्यापारी ने यह कहकर तुरन्त अपनी जान छुड़ा ली कि, "ठीक है, कल देखेंगे ।"

मगर उस खींचातानी में हिन्दबाद के पैर का एक चप्पल टूट गया । समीप में ही बैठे मोची के पास जाकर उसने उसे चप्पल दुरुस्त करने को कहा ।

"कितना देंगे ?" मोची ने पूछा ।

"तुम को खुश कर दूँ, तो पर्याप्त है न ?" यह बात मोची ने मान ली ।

एक पैर में चप्पल पहने चलना मुश्किल था, इसलिये समीप ही जुआ खेलते हुए कुछ लोगों को देख वह अपना मनोरंजन करने उनके पास जाकर खड़ा हुआ । थोड़ी देर बाद बगल में खड़े व्यक्ति ने हिन्दबाद को भी दाँव लगाने को कहा । वह दाँव लगाकर सब का कर्ज़दार बन बैठा । इस पर उसे प्रोत्साहित करनेवाले ने शर्त रखी, "तुम या तो समुद्र का सारा पानी पी जाओ, या तुम्हारे पास जो भी धन है, उसे हमें दे दो । जल्दी निर्णय कर लो ।"

"कल तक मोहलत दे दो तो मैं निर्णय कर लूँगा ।" यह जवाब देकर व्यापारी बुरे हाल पर पछताता हुआ सड़कों पर चलता रहा ।

रास्ते में फिर एक बार उसकी उसी बूढ़ी से मुलाक़ात हुई । हिन्दबाद का उतरा हुआ

चेहरा देखते ही बूढी भाँप गयी, कि कुछ अनहोनी ज़रूर हो गयी है । व्यापारी ने अपना दिनभर का सारा किस्सा सुनाया ।

"बेटे, इस नगर के लोग बड़े पापी हैं । मैंने पहले ही तुम्हें चेतावनी दी थी, फिर भी तुम धोखे में आ ही गये । इस नगर में चन्दन की लकड़ी के एक टुकड़े का दाम दस अशर्फियाँ है । तुम्हारे पास का चन्दन बिकने पर तुम्हें बहुत सारा सोना मिलना चाहिये था । खैर, कोई बात नहीं, जो हुआ सो हुआ । अब भी सही, तुम मेरे कहे अनुसार करोगे तो तुम्हारा घाटा बहुत कुछ वसूल हो सकता है । संध्या के समय तक अगर तुम नगर द्वार पर पहुँच जाओगे तो वहाँ की निर्जन जगह पर तुम्हें एक अन्धा साधु दिखाई देगा । वास्तव में वह साधु नहीं । इस नगर के धोखेबाज़ों का वह गुरु है । अँधेरा फैलते ही सभी धोखेबाज़ उसके पास जाकर उससे सलाहमशविरा करते हैं और अपनी दिनभर की धोखाधड़ी का वृत्तान्त उसे सुनाते हैं । यदि तुम वहीं कहीं छिपकर उनका वार्तालाप सुन सको, तो तुम्हें अपना पैसा वसूलने का रास्ता मिल सकता है । "

अँधेरा फैलने के पहले ही व्यापारी नगरद्वार की ओर चल पड़ा । द्वार के बाहर बूढ़ी के कहे अनुसार एक अन्धा साधु एक पत्थर से सटकर समाधिस्थ सा बैठा दिखाई दिया ।

हिन्दबाद बिना आहट किये उस पत्थर के पीछे ही छिप गया ।

अँधेरा होते ही नगर के सभी धोखेबाज़ आकर एक एक करके भक्तों की भाँति साधु के सामने बैठ गये और अपनी अपनी दिनभर की धोखाधड़ी का परिचय देने लगे । उनमें व्यापारी को धोखा देनेवाले चारों व्यक्ति भी मौजूद थे । हर एक समाचार सुनने के बाद साधु उनकी अक्लमन्दी की आलोचना करने लगा । सारी आलोचना हिन्दबाद ने सुन ली ।

उन में से एक ने कहा, "स्वामी, आज एक परदेशी व्यापारी से मैंने बहुत ही सस्ते दामों से चन्दन की लकड़ी ख़रीदी है । "

"किस भाव से ?" साधू ने पूछा ।

"चन्दन के वज़न की कोई भी चीज़ व्यापारी माँगे, उसे देने की शर्त पर लकड़ी ख़रीदी है । " धोखेबाज़ ने उत्तर दिया ।

"इस से व्यापारी का ही ज्यादा लाभ

होगा । '' साधू ने कहा ।

"स्वामी, आप यह क्या कह रहे हैं ? अगर वह चन्दन के वज़न का सोना भी माँगे तो भी मेरा ही लाभ होगा न ?" धोखेबाज़ ने कहा ।

"वह तो है, मगर उसने अगर चन्दन के वज़न की मक्खियाँ माँगी, जिनमें से आधी नर मक्खियाँ और आधी मादा मक्खियाँ माँगी तो तुम्हारी हालत क्या होगी ?" साधु ने पूछा । इसपर वह धोखेबाज़ निराश होकर वहाँ से चला गया ।

इसके बाद काना आदमी आगे आकर बोला, "स्वामी, मैंने आज एक परदेशी व्यापारी को खूब फँसाया है । मैंने फरियाद की, कि इसी आदमी ने मेरी आँख फोड़ डाली है । शर्त के अनुसार या तो वह व्यापारी अपनी एक आँख दे या अपनी सारी संपत्ति दे दें । ''

"तुम तो निरे मूर्ख हो । वह व्यापारी तुम को बड़ी आसानी से चकमा दे सकता है । तुम ने जो शर्त रखी है, उसको सत्य साबित करने के लिये वह अगर यह कहे, कि वह तभी तुम्हारी बात पर विश्वास करेगा, कि जब तुम्हारी एक आँख और उसकी एक आँख तराजू में रखकर तौलने पर दोनों आँखें बराबर के वज़न की होनी चाहिये, तब तुम्हारी हालत क्या होगी ? तुम्हारी तो दूसरी आँख भी जाती रहेगी और तुम बिलकुल अँधे बन जाओगे । उसकी तो एक आँख बची रहेगी न ?" साधू ने कहा । इसपर काना झल्लाकर वहाँ से चला गया ।

इसके बाद मोची बोला, "स्वामी, आज एक परदेसी ने मुझसे अपनी एक चप्पल दुरुस्त करवायी है और बदले में मुझे खुश करने का

वचन दिया है । मैं उसकी सारी संपत्ति माँगकर उसे भिखारी बना दूँगा । ''

"तुम्हारी अक्ल तो चरने गयी है । वह व्यापारी तुम्हें एक कौड़ी भी नहीं देगा । समझ लो वह तुम से यह पूछ बैठे, "हमारे सुलतान के सभी दुश्मनों का नाश हो गया दहै न ? उंनका सामना करनेवाला इस विश्व में और कोई है ही नहीं । यह ख़बर सुनकर तुम खुश हो न ? " तुम्हें तब लाचार होकर कहना ही पड़ेगा, कि "हाँ हाँ, मैं खुश हूँ । " वरना सैनिक तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ देंगे । " साधु ने कहा । तब वह मोची मन ही मन अपने आप को कोसता हुआ चला गया ।

इसके बाद जुआखोर साधु के सामने आकर बोला, "स्वामी, आज मैंने एक परदेसी को जुए में हरा दिया । मैंने दाँव में यह शर्त रखी थी, कि जुऐ में हारने पर उसे समुद्र का सारा जल पीना पड़ेगा, वरना उसे मुझे उसकी सारी संपत्ति सौंप देनी होगी । ''

"वह व्यापारी तुम्हें कुछ भी. नहीं देगा । मान लो. वह कहेगा, कि समुद्र का सारा जल तुम अपनी अंजली में भर कर लाओ तो वह पी लेगा । तब तुम्हारी हालत क्या होगी ?" साधु ने पूछा ।

यह सारा वार्तालाप हिन्दबाद ने सुन लिया था, इसलिये दूसरे दिन उसे धोखा देनेवाले चारों दगाबाज़ों को आसानी से चकमा दे गया । चन्दन के बराबर वजन की मक्खियों को - जिनमें आधी मादा और आधी नर-मक्खियाँ न दे सकने की हातल में पहले धोखेबाज़ ने प्रत्येक चन्दन के टुकडे की कीमत दस अशर्फियों के हिसाब से धन चुकाया । इसी प्रकार बाकी तीनों ठग हिन्दबाद को सही समाधान न दे सकने की हालत में उससे माफ़ी माँगकर गर्दन झुकाये चले गये । व्यापारी ने चन्दन का पूरा पैसा वसूल कर के पूरे नगर को छान कर बूढ़ी का पता लगाया, उसे कुछ सोना इनाम दिया, और मन में निश्चय किया कि ज़िन्दगी भर फिर भूल कर भी इस नगर में कदम नहीं रखेगा ।

अपना धन लेकर खुशी-खुशी वह बगदाद लौट गया ।

स्वर्णमुद्राएँ

किसी ज़मीनदार के गाँव में एक गरीब किसान रहा करता था । उसका नाम था होरी । उसकी दयनीय अवस्था देख ज़मीनदार ने उस पर रहम खाकर गाँव से दूर स्थित थोड़ी सी बंजर भूमि दे दी और जीवन भर उसका उपयोग करने की अनुमति दे दी ।

होरी एक दिन अपना खेत जोत रहा था, तब उसका हल किसी चीज़ से टकरा गया । वहाँ खोद कर देखने से होरी को स्वर्णमुद्राओं से भरा एक कलश दिखाई दिया । वैसे स्वर्ण मुद्राएँ उसने कभी देखी न थीं । और कलश भर सुवर्ण-मुद्राएँ ! चलो अपनी किस्मत खुल गयी । भगवान की कृपा होती है, तो दरिद्रता नष्ट होते समय नहीं लगता ।

होरी ने सोचा-अगर किसी प्रकार लोगों की आँख बचाकर इन स्वर्णमुद्राओं को घर पहुँचा दूँ तो अपना दारिद्रय भर मिट जाये । मगर इसकी भनक अगर किसी के कान पहुँची, तो इनमें से एक भी मुद्रा मेरे लिये नहीं बचेगी । ज़मीनदार मेरे कान ऐंठकर सारा धन हड़प लेगा ।

मगर यह कलश तो भारी है । अकेले ही इसे घर पहुँचाना असम्भव है । इस काम में पत्नी गौरी की मदद लेनी चाहिये । पर उसके पेट में कोई बात नहीं टिकती ।

होरी बुद्धू तो था नहीं । काफी चतुर था वह । देर तक वह सोचता रहा और एक निर्णय पर पहुँचा । संध्या होते ही उसने घर जाते जाते थोड़ी सी मछलियाँ और एक मुर्गी खरीद ली । चुपके से मकान के पीछे जाकर वहाँ बिछाये जाल में उसने मछलियाँ डाल दी और तालाब में मछली पकड़ने के लिये फैलाये जाल में मुर्गी डाल दी । इतना करने पर वह खाली हाथ घर लौटा ।

"देखो, तुम हमेशा खाली हाथ घर लौटते हो, मैं रसोई क्या ख़ाक बनाऊँ ? खाना तो

सिंधु भालेराव

भरपेट खाना चाहते हो, पर बाज़ार से कुछ सामान खरीदते नानी मरती है । इतना कंजूस बनकर पैसा जमा करके क्या करोगे ? " गौरी खीझकर बोली ।

"तुम यूँ ही मत चिल्लाओ, मैंने सुबह ही पिछवाड़े में और तालाब में जाल बिछाये रखे हैं । चलो, देख तो लें, क्या नसीब है । कहीं कुछ फँसा हो । " कहता हुआ होरी गौरी को साथ लेकर घर के पीछवाड़े पहुँचा । जाल में फँसी मछलियाँ देख गौरी को आश्चर्य हुआ ।

फिर दोनों तालाब पर पहुँचे वहाँ जाल में फँसी मुर्गी देखकर तो गौरी के आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा । वह बोल उठी, "वाह वाह ! कैसा विचित्र है, अद्‌भुत्‌ है ?"

"यह तुम ने देखा ही क्या है ! अरि हमारे खेत में तो स्वर्णमुद्राओं से भरा कलश प्राप्त हुआ है । अर्ध-रात्रि के समय वहाँ जाकर कलश उठा लायेंगे । मगर सुनो, किसी के कानोकान यह ख़बर न पहुँचे । किसी को पता चले, तो ज़मीनदार सब उठा कर ले जाएगा, ख़बरदार । देखो, तुम्हारे मुँह में कोई बात टिकती नहीं । गाँव में ढिंढ़ोरा पिटने की तुम्हारी आदत मैं जानता हूँ । अब की बार सावधान रहो । " होरी ने गौरी को चेतावनी देते हुए अपने लाभ की बात कह डाली ।

अर्धरात्रि के समय पति-पत्नी अँधेरे में ही खेत की ओर चल पड़े । वहाँ होरी ने लाल रंग का पानी और एक टहनी तैयार रखी थी । अँधेरे में ही होरी ने टहनी लाल पानी में डुबोकर गौरी पर पानी छिटक दिया ।

"अरे, यह कैसा पानी बरस रहा है ?" कहते हुए गौरी ने नज़र ऊपर उठाकर देखा । कहीं बादल का निशान नहीं था । पूरा आकाश तारों से टिमटिमा रहा था ।

"बिना बादल के यह कैसी बारिश है ?" गौरी ने पति से पूछा ।

"क्या तुम नहीं जानती, बिना बादल के जब बारिश होती है, तब वह पानी के बदले खून बरसाती है ?" होरी ने पूछा ।

"ओह, ऐसी बात है ?" गौरी ने आश्चर्य से पूछा ।

दोनों मिलकर स्वर्णमुद्राओं से भरा कलश लेकर घर की ओर चल पड़े । ज़मीनदार के घर के पिछवाड़े से गुज़रते हुए उन्होंने दो-तीन

गायों के रँभाने की विचित्र सी आवाज़ सुनी । भयभीत होकर गौरी ने पूछा, "यह कैसी डरावनी आवाज़ है ?"?

"बात कुछ नहीं, ज़मींदार को भूत उठा ले गये हैं, इसलिये उसके नौकर शोक कर रहे हैं । " होरी ने समझाया ।

"ओह ! ऐसी बात है ! " गौरी ने आश्चर्य प्रकट किया ।

इसके बाद दोनों निर्विघ्न घर पहुँचे । होरी ने कलश एक जगह ज़मीन में गाड़ दिया । गौरी थक गयी थी, इसलिये जल्द ही खर्राटे भरने लगी । मगर होरी को अपनी योजना का अंतिम चरण निबटाना था, इसलिये वह जागता रहा । गौरी को सोयी देखकर उसने फिर खोद कर वह कलश एक दूसरे ही स्थान में गाड़ दिया और वह भी सो गया ।

सबेरे जागते ही किसान की पत्नी ने पूछा, "मुझे थोड़ी स्वर्णमुद्राएँ दे दो । मैं कुछ साड़ियाँ और गहने खरीद लाऊँगी । अब तो हम धनवान बन गये हैं न ! "

"पगली, हम अगर इस प्रकार अंधा-धुँध सोना इस्तेमाल करते रहे तो हमारा रहस्य लोगों पर खुल जाएगा । " होरी ने समझाया ।

मगर दोनों के बीच बात बढ़ी और झगड़ा हुआ ।

गौरी घर के पिछवाड़े कुएँ के पास गयी और पड़ोसन राधा को वहाँ देख बोली, "बहन, तुम नहीं जानती मेरा मर्द कैसा कंजूस है । "

"क्यों ? बात क्या है ?" राधा ने पूछा ।

"तुम किसीसे न कहना । हमें अपने खेत में सुवर्णमुद्राओं से भरा कलश हाथ लगा । मगर देखो न, मुझे साड़ियाँ खरीदने एक मुद्रा

भी देने को तैयार नहीं है । '' गौरी ने अपनी शिकायत व्यक्त की ।

दूसरे दिन संध्या-समय तक मुद्राओं की ख़बर गाँव के अधिकांश लोगों तक पहुँची । इसके दो दिन बाद ज़मीनदार के कानों तक भी खबर गयी और बहुत ही नाराज़ होकर वह होरी के घर पहुँचा । उसने किसान को डाँटते हुए कहा, ''अरे दुष्ट, विश्वासघाती ! तुम पर रहम करके मैंने तुम्हें खेत सौंपा । मेरी ज़मीन में मिली स्वर्णमुद्राएँ भी तुम हड़प बैठे ? ज़मीन क्या तुम्हारी बपौती है ?''

भीतर ही भीतर घबराते हुए, मगर प्रकट रूप में हिम्मत कर के होरी बोला, ''स्वर्णमुद्राओं की यह क्या बात है ? आप को किसने यह बात कही मालिक ? ''

''तुम और तुम्हारी पत्नी कलश ले आये हो न ? गौरी ने ही गाँववालों पर यह बात प्रकट की है । '' ज़मींदार ने कहा ।

होरी ने जैसे ही तीक्ष्ण दृष्टि से गौरी की ओर देखा, वह पूछ उठी, ''ऐसे घूर कर क्यों देख रहे हो ? हम दोनों खेत से भारी कलश उठा नहीं लाये ? उस में ही तो स्वर्णमुद्राएं थीं न ? ''

''यह सब कब हुआ ?'' होरी ने विस्मय से पूछा ।

''तुम समझ रहे हो, कि मैं वह सब भूल गयी हूँ ? उसी रात हमारे पिछवाड़े के जालों में मछलियाँ फँसी थीं, और तालाब में फेंके जाल में मुर्गी पकड़ी गयी थी ?'' गौरी ने कहा । उसकी ये बेतुकी बातें सुनकर वहाँ हाज़िर सब लोग हँस पड़े ।

''अरे, तुम लोग हँसते क्यों हो ? उसी रात बिन बादल की बरसात हुई थी और वह भी खून की । हाँ, आधी रात जब भूत ज़मीनदार को उठा ले गये थे, तब उनके नौकर सिर पीटने लगे थे । '' गौरी ने कहा ।

''छीः, पगली औरत !'' इस प्रकार उसे कुछ गालियाँ देकर ज़मीनदार वहाँ से चला गया ।

वहाँ इकट्ठे लोग भी गौरी की बातों पर विश्वास नहीं कर पाये, और सब अपने घर चले गये ।

उड़नेवाली मछली

उड़नेवाली मछली वास्तव में वायु में नहीं उड़ती । कलेजे के नीचेवाले पंखों को खोलकर अपनी पूँछ से पानी को एक छलाँग में उछालकर तेज़ गति से ऊपर उड़कर १२-१४ सेकंड तक उडते हुए दूसरे स्थान पर गिर जाती है ।

ऊँचे पेड़

कॅलिफोर्निया के कोस्ट रेड वुड (सीक्वो सेंपर वीरेन्स) नाम की जाति के पेड़ दुनिया के सभी पेड़ों से अधिक ऊँचाई तक बढते हैं । ये पेड़ ३६७.८ फुट ऊँचाई तक बढ़ते हैं ।

कछुओं की दीर्घायु

रीढ़ की हड्डीवाले प्राणियों में कछुआ चिर काल तक जीवित रहता है । कहते हैं कि कुछ कछुए १६० वर्षों तक जीवित रहे । पर इस बात के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं कि ये कछुए ११६ वर्षों से अधिक काल तक जीवित रहे हों ।
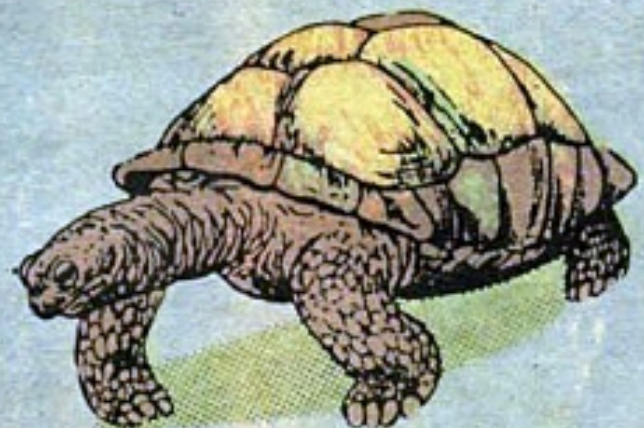
अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरूआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सैरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन तथा मिनरल, सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ़्त! सैरेलॅक बेबी-केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

Anant Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ अप्रैल १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

फ़रवरी के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : सीखने की ललक!

द्वितीय फोटो : खुशी की झलक!!

प्रेषक : अजीतश्रीवास्तव, "चेतना", नार्थ आफ़ आई. टी. आई., मुजफ्फरपुर - ८४२००१

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

In your MARCH issue of ...
Price Rs 5 March 1989 Vol. 1 No. 2
JUNIOR
QUEST
Where finding out is fun
The new monthly English children's magazine.
*How to be a writer
*Meet Lorry the loris
*Age of the Epics
* Zip thró your exams with our pull-out
A Super Bargain for our first subscribers!
A whole year's JUNIOR QUEST for Rs. 50/- only
Money order/Postal Order/Demand Draft to
DOLTON AGENCIES
AMA BUILDINGS
DRAS 600 026
RUSH!
FOR YOUR COPY